भारत दुनिया का नया बॉस, ... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

जिंदगी की हर मुश्किल का दिव्य... पेज 7

वर्ष 6, अंक 347 | भोपाल, शुक्रवार 29 मई, 2026 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, त्रियोदशी 2083 | मूल्य 2 रुपए

मशहूर शायर डॉ. बशीर बद्र का निधन, 91 साल की उम्र में भोपाल में ली अंतिम सांस

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मशहूर शायर और गजलकार डॉ. बशीर बद्र का गुरुवार दोपहर भोपाल में निधन हो गया. 91 साल के बशीर बद्र लंबे समय से डिमेंशिया बीमारी से जूझ रहे थे और उनकी तबीयत लगातार खराब चल रही थी. उन्होंने अपने घर पर अंतिम सांस ली. उनके निधन से साहित्य और शायरी जगत में शोक की लहर है.

उर्दू शायरी की दुनिया से दुखद खबर सामने आई है. मशहूर शायर डॉ. बशीर बद्र का आज गुरुवार दोपहर भोपाल में निधन हो गया. उन्होंने 91 साल की उम्र में अपने घर पर अंतिम सांस ली. डॉ. बशीर बद्र लंबे समय से डिमेंशिया बीमारी से जूझ रहे थे. उनकी याददाश्त काफी कमजोर हो चुकी थी और वे लोगों को पहचान भी नहीं पा रहे थे.

पिछले कुछ समय से उनकी तबीयत लगातार खराब चल रही थी. आज गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे उनका निधन हो गया. डॉ. बशीर बद्र उर्दू शायरी की दुनिया का बड़ा नाम थे. उनकी गजलें और शेर आम लोगों से लेकर साहित्य प्रेमियों तक के बीच बेहद लोकप्रिय रहे. उनकी लिखी कई पंक्तियां लोगों की जुबान पर आज भी जिंदा हैं.

मोहब्बत, तन्हाई, रिश्ते, टूटन, उम्मीद... जिंदगी के जितने रंग हैं, बशीर बद्र ने उन्हें उतनी ही सादगी से कागज पर उतारा. अब वही आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई है.

वे लंबे समय से डिमेंशिया से जूझ रहे थे. हालत ऐसी हो चुकी थी कि याददाश्त लगभग जा चुकी थी और वे लोगों को पहचान भी नहीं पा रहे थे. पिछले कुछ महीनों से उनकी तबीयत लगातार खराब चल रही थी. गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे उन्होंने अपने घर पर अंतिम सांस ली. बशीर बद्र उन चुनिंदा शायरों में थे, जिनकी गजलें सिर्फ मुशायरों तक सीमित नहीं रहीं. उनकी लाइनें लोगों की डायरी, वॉट्सऐप स्टेटस, मोहब्बत के खत और टूटे दिलों की जुबान बन गईं.

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए...'

और ये भी-

मुझे मालूम है उसका ठिकाना फिर कहां होगा
परिंदा आसमां छूने में जब नाकाम हो जाए...'

बशीर बद्र की शायरी की सबसे बड़ी ताकत यही थी कि वो मुश्किल अल्फाज में नहीं, सीधे दिल में उतरती थी.

मोहब्बत को उन्होंने मुश्किल नहीं, आसान बताया. उनकी शायरी में दर्द था, लेकिन उम्मीद भी थी. मोहब्बत थी, लेकिन दिखावा नहीं था.

उन्होंने लिखा-

'सर से पा तक वो गुलाबों का शजर लगता है
बा-वजू होके भी छूते हुए डर लगता है...'

और फिर मोहब्बत को इतना आसान बना दिया कि पढ़ने वाला मुस्कुरा उठे-

'मैं तेरे साथ सितारों से गुजर सकता हूं
कितना आसान मोहब्बत का सफर लगता है...'

बशीर बद्र सिर्फ इश्क के शायर नहीं थे. उन्होंने जिंदगी के संघर्ष को भी उतनी ही खूबसूरती से लिखा.

'जिस दिन से चला हूं मेरी मंजिल पे नजर है
आंखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा...'

और फिर जिंदगी की तकलीफ को कुछ यूं बयान किया-

ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
तुमने मेरा कांटों भरा बिस्तर नहीं देखा...'

उनकी शायरी में एक अजीब सी नरमी थी. ऐसा लगता था जैसे कोई बहुत धीरे से जिंदगी समझा रहा हो.

'कहां से आई ये खुशबू, ये घर की खुशबू है
इस अजनबी के अंधेरे में कौन आया है...

'महक रही है जमीं चांदनी के फूलों से
खुदा किसी की मोहब्बत पे मुस्कुराया है...'

15 फरवरी 1935 को उत्तर प्रदेश के अयोध्या में जन्मे बशीर बद्र बाद में भोपाल आकर बस गए. उन्होंने उर्दू साहित्य को कई यादगार गजलें, किताबें और अशआर दिए. कई बड़े सम्मानों से उन्हें नवाजा गया. लेकिन सच ये है कि उनका सबसे बड़ा सम्मान वो लोग थे, जिन्होंने उनकी शायरी को अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लिया. आज बशीर बद्र नहीं हैं. लेकिन उनकी लाइनें शायद हमेशा रहेंगी... किसी की याद में, किसी की मोहब्बत में, किसी की तन्हाई में. डॉ. बशीर बद्र के निधन की खबर सामने आने के बाद साहित्य और शायरी जगत में शोक की लहर है. उनके चाहने वाले सोशल मीडिया पर उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

क्या वास्तव में मोदी सरकार केवल अडानी-अंबानी को ही आगे बढ़ा रही है?

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आज देश में हर जगह एक चर्चा सुनने को मिलती है कि मोदी सरकार सब कुछ अडानी और अंबानी को दे रही है। सोशल मीडिया से लेकर राजनीतिक मंचों तक यही बात बार-बार कही जाती है। लेकिन अगर इस विषय को राजनीति से हटकर व्यापार और देश की आर्थिक व्यवस्था के नजरिए से देखा जाए, तो तस्वीर कुछ अलग दिखाई देती है। सच्चाई यह है कि कोई भी व्यक्ति केवल सरकार के सहारे इतना बड़ा उद्योगपति नहीं बन सकता। सरकार अवसर दे सकती है, माहौल बना सकती है, लेकिन उस अवसर को सफलता में बदलना हर किसी के बस की बात नहीं होती। अडानी और अंबानी जैसे उद्योगपतियों के पास अपना एक बिजनेस कैलिबर है, अपनी सोच है, जोखिम लेने की क्षमता है और वर्षों की मेहनत है। उसी के दम पर वे आज इस मुकाम तक पहुंचे हैं।

अगर केवल सरकार ही किसी को बड़ा बनाती, तो देश में हजारों उद्योगपति एक जैसे दिखाई देते। लेकिन ऐसा नहीं है। आज भारत में कई नए स्टार्टअप तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। Zomato, OYO, Ola, Paytm और आईटी सेक्टर की कई कंपनियां इसका उदाहरण हैं। क्या इन कंपनियों को सरकार सपोर्ट नहीं कर रही? अगर सरकार केवल दो उद्योगपतियों को ही आगे बढ़ाना चाहती, तो इतने बड़े स्तर पर नए स्टार्टअप और नई कंपनियां देश में खड़ी नहीं होतीं।

असल में कुछ लोगों ने यह एक एजेंडा बना लिया है कि हर बात में मोदी सरकार को नीचे दिखाना है। देश में जो विकास हो रहा है, जो नए अवसर पैदा हो रहे हैं, जो सड़कें, एयरपोर्ट, डिजिटल सिस्टम और उद्योग बढ़ रहे हैं, वह उन्हें दिखाई नहीं देता। केवल बड़े उद्योगपतियों के नाम लेकर माहौल बनाने की कोशिश की जाती है।

यह भी समझना जरूरी है कि देश की अर्थव्यवस्था केवल सरकारी योजनाओं से नहीं चलती। सरकार को राजस्व चाहिए होता है और वह राजस्व व्यापार और उद्योगों से आता है। आज जो लोग मुफ्त योजनाओं का लाभ ले रहे हैं, चाहे मुफ्त राशन हो या अन्य सरकारी सुविधाएं, उसका पैसा भी कहीं न कहीं देश के उद्योग और टैक्स से ही आता है। बड़े उद्योग जितना ज्यादा व्यापार करेंगे, उतना ज्यादा टैक्स देंगे और उतना ही ज्यादा पैसा सरकार के पास विकास कार्यों के लिए आएगा।

मैं इसे एक परिवार के उदाहरण से समझाना चाहता हूं। किसी भी परिवार में मुखिया उसी व्यक्ति को बड़ी जिम्मेदारी देता है जिसके अंदर उस जिम्मेदारी को निभाने की क्षमता होती है। इसका मतलब यह नहीं कि बाकी लोग कमजोर हैं या उनसे भेदभाव हो रहा है। इसका मतलब केवल इतना होता है कि जिस व्यक्ति में काम संभालने का कैलिबर ज्यादा दिखाई देता है, उसे बड़ी जिम्मेदारी दी जाती है। व्यापार में भी यही होता है। जिन कंपनियों में बड़े स्तर पर काम करने की क्षमता होती है, वे बड़े प्रोजेक्ट संभालती हैं।

दुनिया के हर देश में कुछ बड़े उद्योगपति होते हैं जिनका नाम सबसे ऊपर दिखाई देता है। अमेरिका को ही देख लीजिए। वहां Bill Gates, Elon Musk, Jeff Bezos जैसे बड़े नाम हैं। क्या इसका मतलब यह है कि अमेरिकी सरकार केवल उन्हीं को सपोर्ट करती है? नहीं। यह उनकी क्षमता, सोच और बिजनेस विजन का परिणाम है।

भारत में भी यही स्थिति है। जो लोग जोखिम लेने को तैयार हैं, बड़े स्तर पर निवेश कर रहे हैं और लाखों लोगों को रोजगार दे रहे हैं, उनका नाम सामने आएगा ही। इसका यह मतलब नहीं कि सरकार केवल उन्हीं के लिए काम कर रही है।

आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। स्टार्टअप संस्कृति तेजी से बढ़ रही है। छोटे शहरों के युवा भी अपने व्यवसाय शुरू कर रहे हैं। आईटी, मैन्युफैक्चरिंग, फूड डिलीवरी, ट्रैवल, टेक्नोलॉजी और डिजिटल सेक्टर में भारत नए रिकॉर्ड बना रहा है। यह सब केवल एक या दो उद्योगपतियों के कारण नहीं, बल्कि पूरे बिजनेस इकोसिस्टम के कारण संभव हो रहा है।

देश के विकास को केवल राजनीतिक नजरिए से देखने के बजाय आर्थिक नजरिए से भी समझना जरूरी है। हर सफल उद्योगपति को केवल सरकार का आदमी बताना सही नहीं है। सफलता के पीछे मेहनत, निर्णय क्षमता, जोखिम और वर्षों का संघर्ष भी होता है।

आलोचना लोकतंत्र का हिस्सा है और सवाल पूछना भी जरूरी है, लेकिन हर सफलता को केवल राजनीति से जोड़ देना भी उचित नहीं है। देश तब आगे बढ़ता है जब सरकार, उद्योग और जनता तीनों मिलकर काम करते हैं। और आज भारत उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है।

बांग्लादेशी घुसपैठियों को वापस ढूँढ़ ढूँढ़कर भगाया जा रहा है

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी कोलकाता

पश्चिम बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद अब वह दौर शुरू हो चुका है, जिसका इंतजार लंबे समय से राज्य की जनता कर रही थी। मुख्यमंत्री शुभेन्दु अधिकारी के नेतृत्व में बंगाल सरकार ने अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ जिस सख्त अभियान की शुरुआत की है, उसने सीमा पार बैठे घुसपैठियों और उनके संरक्षकों में भारी दहशत फैला दी है। "डिटेक्ट-डिलीट-डिपोर्ट" नीति के तहत बंगाल सरकार अब हर उस व्यक्ति की पहचान कर रही है जो अवैध तरीके से भारत में घुसकर यहां के संसाधनों पर कब्जा जमाए बैठा था। सरकार का साफ संदेश है कि भारत की जमीन अब घुसपैठियों की शरणस्थली नहीं बनेगी।

उत्तर 24 परगना के स्वरूपनगर स्थित हाकिमपुर जांच चौकी पर जो दृश्य दिखाई दिया, उसने वर्षों से चल रहे अवैध घुसपैठ के पूरे खेल को उजागर कर दिया। सैकड़ों बांग्लादेशी मुसलमान पुरुष, महिलाएं और बच्चे बैग, कंबल और ट्रॉलियों के साथ सीमा पर जमा हो गए ताकि गिरफ्तारी और हिरासत से पहले किसी तरह वापस बांग्लादेश पहुंच सकें। यह वही लोग हैं जो वर्षों से बंगाल के अलग-अलग इलाकों में बिना किसी वैध दस्तावेज के रह रहे थे और स्थानीय संसाधनों पर बोझ बने हुए थे।

मुख्यमंत्री शुभेन्दु अधिकारी ने साफ शब्दों में चेतावनी दी है कि जो अवैध तरीके से भारत में रह रहे हैं, वे तुरंत वापस लौट जाएं, अन्यथा सरकार अपना काम करेगी। उनका यह कठोर रुख ही आज बंगाल की जनता में विश्वास पैदा कर रहा है। वर्षों तक तुष्टिकरण की राजनीति करने वाली ताकतों ने घुसपैठ को नजरअंदाज किया, लेकिन अब पहली बार राज्य सरकार खुलकर राष्ट्रीय सुरक्षा के पक्ष में खड़ी दिखाई दे रही है। शुभेन्दु अधिकारी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बंगाल की जनता के भोजन, रोजगार और संसाधनों पर पहला अधिकार भारतीय नागरिकों का है, न कि अवैध घुसपैठियों का।

राज्य सरकार ने हर जिले में होल्डिंग सेंटर बनाने की प्रक्रिया तेज कर दी है। स्वरूपनगर क्षेत्र में पहले से तीन होल्डिंग सेंटर संचालित हो रहे हैं, जहां करीब तीन सौ पचास घुसपैठियों को रखा गया है। सिलिगुड़ी, माटीगाड़ा और नक्सलबाड़ी क्षेत्र में भी नया होल्डिंग सेंटर बनाया जा रहा है। सीमा क्षेत्रों में निगरानी कई गुना बढ़ा दी गई है। पुलिस, सीमा सुरक्षा बल और प्रशासनिक एजेंसियां लगातार दस्तावेजों की जांच कर रही हैं ताकि कोई भी अवैध व्यक्ति बच न सके।

हाकिमपुर में पहुंचे कई लोगों ने खुद स्वीकार किया कि वह वर्षों से बिना दस्तावेजों के बंगाल में रह रहे थे। कुछ ने यह भी माना कि यदि पिछली सरकार सत्ता में बनी रहती तो उन्हें कभी लौटने की जरूरत नहीं पड़ती। यही बयान यह साबित करता है कि वर्षों तक राजनीतिक संरक्षण के कारण बंगाल में अवैध घुसपैठ को बढ़ावा मिलता रहा। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। भाजपा सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि बंगाल को अवैध घुसपैठ से मुक्त करना उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। दस्तावेज जांच, सीमा निगरानी और होल्डिंग सेंटरों की तैयारी ने उन लोगों की नींद उड़ा दी है जो वर्षों से भारत में छिपकर रह रहे थे। अब उन्हें समझ आ चुका है कि भारत की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने वालों के लिए यहां कोई जगह नहीं बची है।

हम आपको याद दिला दें कि तृणमूल कांग्रेस वर्षों तक यह दावा करती रही कि बंगाल में बड़े पैमाने पर घुसपैठ नहीं होती। लेकिन आज सीमा पर लगी कतारें खुद सच्चाई बयान कर रही हैं। जिन लोगों ने बंगाल को वोट बैंक की राजनीति का अड्डा बना दिया था, उन्हें अब जनता ने विपक्ष की बेंच पर बैठा दिया है।

बंगाल की जनता अब सुरक्षित सीमाएं और सख्त प्रशासन चाहती है।

उधर, इस पूरे घटनाक्रम के बीच भारत-बांग्लादेश सीमा को और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए कई नए प्रस्तावों पर भी चर्चा चल रही है। नदी और दलदली इलाकों में जहां बाड़ लगाना कठिन है, वहां मगरमच्छ और जहरीले सांप जैसे खतरनाक जीवों को तैनात करने की संभावना पर विचार करने की खबरें हैं। बताया जा रहा है कि सीमा सुरक्षा बल ने इन संवेदनशील इलाकों में प्राकृतिक अवरोध खड़े करने की व्यवहारिकता पर अध्ययन शुरू किया है। हालांकि कुछ तथाकथित मानवाधिकार कार्यकर्ता इसका विरोध कर रहे हैं, लेकिन देश की सुरक्षा सर्वोपरि है। यदि सीमा पार से लगातार अवैध घुसपैठ, तस्करी और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरे पैदा किए जाएंगे, तो भारत को हर संभव कठोर कदम उठाने का अधिकार है। बांग्लादेशी घुसपैठियों को अब यह समझ लेना चाहिए कि जो भी अवैध तरीके से भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश करेगा, उसके लिए कानून, सुरक्षा बल और सीमा की कठोर व्यवस्था किसी भी कीमत पर पीछे हटने वाली नहीं है।

भीषण गर्मी का सामना कर रहे उत्तर पश्चिम भारत को जल्द ही मिल सकती है गुड न्यूज

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

भीषण गर्मी का सामना कर रहे उत्तर पश्चिम भारत को मौसम जल्द ही गुड न्यूज दे सकता है। खबर है कि भारत की ओर 2500 किलोमीटर चौड़े बादलों का समूह बढ़ रहा है। भारत के इनसैट-3डीएस उपग्रह ने ये तस्वीरें कैद की हैं। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, मौसम सैटेलाइट द्वारा ली गई यह तस्वीर इस उपमहाद्वीप के ऊपर बारिश लाने वाले सिस्टम के सक्रिय होने का संकेत है। बादलों का यह समूह उत्तरी भारत में 2000 से 2500 किमी से भी अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। मौसम विभाग ने इन तस्वीरों को शेयर किया है। तस्वीरों में उत्तर और मध्य भारत में फैला हुआ बादलों का विशाल झुंड दिख रहा है। बादलों का जमावड़ा आने वाले तूफानों व भीषण गर्मी के बाद राहत का संकेत है। बादलों का यह घना झुंड पाकिस्तान व उत्तर-पश्चिमी भारत से लेकर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, यूपी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों तक फैला है। दिल्ली के कई हिस्सों में गुरुवार शाम को तेज हवाएं चलने और हल्की बारिश होने से शहर में जारी भीषण गर्मी से लोगों को काफी राहत मिली। IMD यानी भारत मौसम विज्ञान विभाग ने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी में गरज-चमक के साथ आंधी आई, जिस दौरान पालम में हवा की अधिकतम गति 61 किलोमीटर प्रति घंटा दर्ज की गई। गुरुवार को दिल्ली के प्रमुख मौसम केंद्रों पर अधिकतम तापमान सामान्य से कम दर्ज किया गया।

पश्चिम बंगाल में बीएसएफ को 600 हेक्टेयर जमीन, शाह बोले- 'एक-एक घुसपैठिए को बाहर करेंगे'

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल में अवैध घुसपैठ पर कड़ा बयान जारी किया, जिससे संकेत मिलता है कि केंद्र भारत-बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा बढ़ाने के लिए आक्रामक कदम उठाने की तैयारी कर रहा है। गुजरात के गांधीनगर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए गृह मंत्री शाह ने कहा कि सुवेंदु अधिकारी के नेतृत्व वाली सरकार ने सीमा सुरक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी लाने के लिए मात्र सात दिनों के भीतर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) को लगभग 600 हेक्टेयर भूमि सौंपी है। उन्होंने कहा कि रणनीतिक रूप से संवेदनशील "चिकन नेक" कॉरिडोर पर विशेष ध्यान दिया गया है, जहां निगरानी और राष्ट्रीय सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के लिए लगभग 121 हेक्टेयर भूमि हस्तांतरित की गई है।

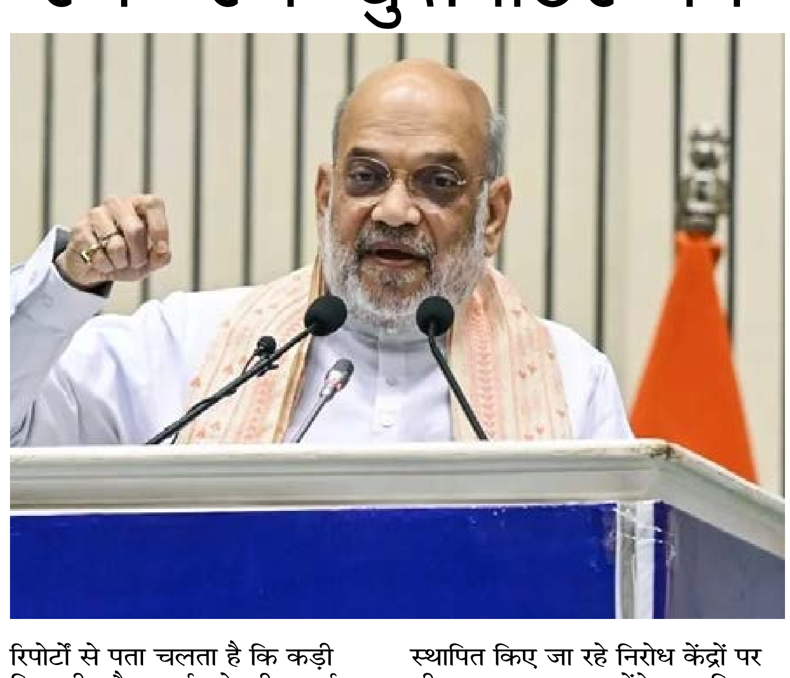

शाह ने दावा किया कि इस तीव्र कार्रवाई से अवैध घुसपैठियों पर दबाव बनना शुरू हो गया है, और रिपोर्टों से पता चलता है कि कड़ी निगरानी और प्रवर्तन के बीच कई घुसपैठिए अब स्वेच्छा से वापस लौट रहे हैं। गृह मंत्री ने अवैध आप्रवासन मामलों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने के लिए राज्य भर में स्थापित किए जा रहे निरोध केंद्रों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत-बांग्लादेश सीमा पर लंबे समय से लंबित बाड़बंदी का काम जल्द ही फिर से शुरू होने की उम्मीद है, जिसका उद्देश्य घुसपैठ के असुरक्षित मार्गों को बंद करना है। केंद्र के कड़े रुख की पुष्टि करते हुए अमित शाह ने घोषणा की कि प्रत्येक अवैध आप्रवासी की पहचान की जाएगी और उसे वापस भेजा जाएगा।

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने मंगलवार को कहा कि राज्य में अवैध रूप से रह रहे कथित बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने ऐसे मामलों से निपटने के लिए हर जिले में हिरासत केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

विदेशी अधिनियम का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कानून कई वर्षों से मौजूद है और इसे ठीक से लागू किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि पुलिस को निर्देश दिया गया है कि अवैध घुसपैठियों को नियमित जेलों में न रखा जाए। अधिकारी के अनुसार, ऐसे लोगों को जेलों में रखने से देश के संसाधनों पर अनावश्यक बोझ पड़ेगा। इसके बजाय, उन्होंने कहा कि उन्हें बांग्लादेश वापस भेज दिया जाना चाहिए, और उन्हें वापस लेना पड़ोसी देश की जिम्मेदारी है।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

भीषण गर्मी के बीच आंधी-बारिश, भिंड में बिजली गिरने से महिला की मौत, दमोह में ओले बरसे, 10 शहरों में पारा 45 पार

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नेहरू नौतपा के चौथे दिन भी मध्य प्रदेश में भीषण गर्मी का असर बना रहा। प्रदेश के 10 शहरों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक दर्ज किया गया। खजुराहो सबसे गर्म रहा, जहां पारा 46.5 डिग्री तक पहुंच गया। वहीं, राजगढ़ में 46 डिग्री, दतिया में 45.7 डिग्री, नौगांव और दमोह-मलाजखंड में 45.5 डिग्री, टीकमगढ़ में 45.2 डिग्री, सतना में 45.1 डिग्री और मंडला-सागर में 45 डिग्री तापमान रिकॉर्ड किया गया।
तेज गर्मी के बीच गुरुवार रात कई जिलों में मौसम ने अचानक करवट ले ली। भिंड में आकाशीय बिजली गिरने से एक वृद्ध महिला और चार बकरियों की मौत हो गई। महिला तेज आंधी-पानी के दौरान बकरियों को सुरक्षित जगह बांध रही थी, तभी बिजली गिरने से हादसा हो गया। शहर में 40 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से हवाएं चलीं और कई जगह पेड़ गिर गए। आंधी के चलते कई इलाकों में ब्लैकआउट की स्थिति बन गई।
इधर, दमोह के तेंदूखेड़ा ब्लॉक में शाम करीब 4:30 बजे बारिश के साथ ओलावृष्टि हुई। करीब आधे घंटे तक ओले गिरते रहे, जिसके बाद मौसम में ठंडक घुल गई और लोगों को गर्मी से राहत मिली।
ग्वालियर के गांधी रोड इलाके में भी तेज आंधी और बारिश के दौरान एक बड़ा पेड़ सड़क पर गिर गया। घटना के समय सड़क पर कई वाहन गुजर रहे थे, लेकिन राहत की बात रही कि कोई जनहानि नहीं हुई।
मौसम विभाग के अनुसार, प्रदेश के 48 जिलों में हीटवेव और तेज गर्मी का अलर्ट जारी है। खजुराहो और नौगांव पिछले 10 दिनों से प्रदेश के सबसे गर्म शहर बने हुए हैं। दोनों शहरों में तापमान 47 डिग्री के करीब पहुंच चुका है और गुरुवार को यहां तीव्र लू का रेड अलर्ट जारी किया गया।
नौतपा में भारत के कई शहरों में टेम्परेचर 45C के पार चला गया है। तेज धूप के साथ चलने वाली गर्म हवाओं से लू यानी हीटस्ट्रोक का रिस्क बढ़ गया है। समय पर इलाज न मिले तो यह स्थिति जानलेवा हो सकती है। रूटीन में कुछ जरूरी बदलाव करके लू के रिस्क से काफी हद तक बचा जा सकता है। पूरी खबर पढ़ें...
मौसम विभाग ने अगले 4 दिन तक मौसम का फोरकास्ट जारी किया है। इनमें 29, 30 और 31 मई को कई जिलों में बारिश का अनुमान जताया है। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) की वजह से ऐसा मौसम रहेगा। भोपाल में पिछले 14 साल में 7 बार नौतपा के दौरान बारिश दर्ज हुई, जबकि 2 बार सिर्फ बूंदाबांदी हुई थी। इस बार शुरुआत में ही बूंदाबांदी हो गई है।
2018 और 2019 में सबसे ज्यादा तपिश रही, जब औसत तापमान 43 से ऊपर पहुंचा था। बुधवार को प्रदेश के अधिकांश हिस्से में भीषण गर्मी पड़ी। खजुराहो-नौगांव में अधिकतम तापमान 46.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दतिया प्रदेश का तीसरा सबसे गर्म शहर दर्ज किया गया। यहां पारा 45.7 डिग्री सेल्सियस रहा। रीवा में 45.4 डिग्री, दमोह में 45.2 डिग्री, राजगढ़-टीकमगढ़ में 45 डिग्री, सतना में 44.9 डिग्री, मंडला, नरसिंहपुर-श्योपुर में 44.6 डिग्री, सागर-रायसेन में 44.4 डिग्री, मलाजखंड में 44.2 डिग्री और गुना में 44 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर में सबसे ज्यादा 44.5 डिग्री, जबलपुर में 43 डिग्री, भोपाल में 43.6 डिग्री, इंदौर में 40.4 डिग्री और उज्जैन में 41.8 डिग्री रहा।
मौसम विभाग ने गुरुवार को कुल 46 जिलों में गर्म हवा चलने और भीषण गर्मी पड़ने की चेतावनी जारी की है। छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला और डिंडौरी ऐसे जिले हैं, जहां दोपहर में तो तेज गर्मी पड़ेगी, लेकिन शाम को बारिश हो सकती है। भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन में भी तेज गर्मी रहेगी। इंदौर, धार, बड़वानी, झाबुआ, आलीराजपुर, देवास, हरदा, नर्मदापुरम और बैतूल में लू से राहत मिलेगी।
32 जिलों में लू का यलो अलर्टः भोपाल, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, शाजापुर, आगर-मालवा, उज्जैन, रतलाम, नीमच, मंदसौर, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, बालाघाट, सिवनी, मंडला, जबलपुर, डिंडौरी, अनूपपुर और शहडोल। 9 जिलों में तेज गर्मीः इंदौर, धार, बड़वानी, झाबुआ, अलीराजपुर, देवास, हरदा, नर्मदापुरम और बैतूल।

इंदौर के बीचों-बीच अवैध गोदाम से 25 से ज्यादा सिलेंडर जब्त

दैनिक कारखाने का सफर। इंदौर

इंदौर में रसोई गैस को लेकर सख्त नियमों और लगातार निगरानी के दावों के बीच नगर निगम की ही संपत्ति में अवैध रूप से गैस सिलेंडरों का बड़ा जखीरा मिलने से हड़कंप मच गया। गुरुवार को खाद्य विभाग की टीम ने नगर निगम के कोठारी मार्केट स्थित महाराजा कॉम्प्लेक्स स्थित एक दुकान पर कार्रवाई करते हुए वहां से 25 से ज्यादा कमर्शियल गैस सिलेंडर जब्त किए। खास बात यह रही कि दुकान पर अवैध कब्जा होने की जानकारी सामने आने के बाद टीम ने मौके पर पहुंचकर ताला तोड़ कार्रवाई की।
प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि यह गोदाम भोला नामक व्यक्ति द्वारा संचालित किया जा रहा था। अधिकारियों को सूचना मिली थी कि दुकान में बड़ी मात्रा में गैस सिलेंडर रखे गए हैं। सूचना के आधार पर खाद्य विभाग की टीम मौके पर पहुंची और जांच की तो अंदर बड़ी संख्या में कमर्शियल सिलेंडर भरे मिले। इसके बाद सभी सिलेंडरों को जब्त कर लिया गया।
जानकारी के अनुसार क्षेत्र में 1 जून को भंडारे का आयोजन है। आशंका जताई जा रही है कि उसी आयोजन में उपयोग के लिए यह सिलेंडर यहां एकत्रित किए गए थे। हालांकि विभाग इस बात की भी जांच कर रहा है कि सिलेंडरों का भंडारण वैध अनुमति के तहत किया गया था या नहीं।
मामले में सबसे बड़ा सवाल यह खड़ा हो रहा है कि जब घरेलू और कॉमर्शियल गैस सिलेंडरों के परिवहन व भंडारण को लेकर कड़े नियम लागू हैं, तब नगर निगम परिसर में ही इतने बड़े स्तर पर सिलेंडरों का जखीरा कैसे तैयार हो गया।
स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि यहां किसी प्रकार की दुर्घटना या आग लग जाती तो बड़ा हादसा हो सकता था। सूत्रों के मुताबिक जिस दुकान में सिलेंडर रखे गए थे, वहां लंबे समय से अवैध कब्जे की शिकायतें भी सामने आती रही हैं। अब खाद्य विभाग और संबंधित एजेंसियां इस बात की जांच कर रही हैं कि सिलेंडर कहां से लाए गए, उनका उपयोग किस उद्देश्य के लिए होना था और क्या इसके पीछे किसी संगठित अवैध गैस कारोबार का नेटवर्क सक्रिय है। फिलहाल विभाग ने सिलेंडरों को जब्त कर मामले की जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों का कहना है कि दस्तावेजों की जांच के बाद संबंधित लोगों के खिलाफ आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

ट्विशा केस- सीबीआई ने रिटायर्ड जज सास को गिरफ्तार किया, 7 घंटे तक की पूछताछ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के एक्ट्रेस ट्विशा शर्मा मौत मामले में सीबीआई ने गुरुवार को सास और रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह को गिरफ्तार कर लिया। ट्विशा की सास गिरिबाला सिंह को लेकर सीबीआई अधिकारी MANIT परिसर (मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) पहुंचे। यहां मेडिकल बोर्ड को बुलाकर उनका चेकअप कराया गया। इसके बाद उन्हें भोपाल स्थित सीबीआई के ऑफिस ले जाया गया। न्यूज एजेंसी ANI के मुताबिक, गिरिबाला को शुक्रवार को कोर्ट में पेश किया जाएगा। गिरिबाला पर सबूतों से छेड़छाड़ करने के आरोप हैं। इससे पहले सीबीआई टीम गुरुवार सुबह साढ़े 10 बजे गिरिबाला के घर पहुंची। करीब 7 घंटे तक पूछताछ करने के बाद शाम 5 बजकर 10 मिनट पर गिरिबाला सिंह गिरफ्तार किया गया। इससे पहले बुधवार को मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने गिरिबाला की अग्रिम जमानत रद्द कर दी थी। हाईकोर्ट ने देर रात 17 पन्नों का आदेश जारी किया। इसमें कहा- मामले की गंभीरता, सबूत और जांच की स्थिति को देखते हुए आरोपी पक्ष को राहत देना उचित नहीं था। इससे पहले आज जांच के दौरान सीबीआई ने गिरिबाला सिंह के घर में हाई इंटेंसिटी 3D कैमरा लगाकर पूरे परिसर की 360 डिग्री रिकॉर्डिंग की। आसपास की लोकेशन भी स्कैन की गई, ताकि यह पता लगाया जा सके कि घटनास्थल किसी पड़ोसी मकान की छत या बालकनी से दिखाई देता है या नहीं। 12 मई की रात भोपाल के कटारा हिल्स इलाके में ट्विशा की संदिग्ध हालात में मौत हुई थी। ससुराल पक्ष इसे आत्महत्या बता रहा है, जबकि मायके पक्ष ने पति और ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाया है। 24 मई को भोपाल AIIMS में दिल्ली AIIMS की टीम ने ट्विशा की डेड बॉडी का दोबारा पोस्टमॉर्टम किया। इसके बाद शाम को भदभदा श्मशान घाट में ट्विशा का अंतिम संस्कार किया गया। भाई मेजर हर्षित शर्मा ने मुखाग्नि दी थी।

इंदौर में रोहित हत्याकांड में दो और आरोपी गिरफ्तार, रुपए के विवाद में हुई थी मारपीट, शव एमवाय अस्पताल छोड़कर भागे थे

दैनिक कारखाने का सफर। इंदौर

इंदौर के एरोड्रम इलाके में शुक्रवार रात रोहित सोनाने की हत्या के मामले में पुलिस ने दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी रोहित के शव को एमवाय अस्पताल छोड़कर फरार हो गए थे। पुलिस ने इस मामले में पिंटू गोस्वामी और मित वर्मा को गिरफ्तार किया है। इससे पहले पुलिस मिलन गोहर और ऋतिक परमार को पकड़ चुकी है। एरोड्रम पुलिस के मुताबिक अब तक इस हत्याकांड में मित वर्मा, पिंटू गोस्वामी, मिलन गोहर और ऋतिक परमार की गिरफ्तारी हो चुकी है। जांच में सामने आया है कि शुक्रवार रात रुपए के लेनदेन को लेकर आरोपियों ने रोहित के साथ मारपीट की थी। इसी दौरान रोहित बिल्डिंग से नीचे गिर गया था। घटना के बाद आरोपी उसे एमवाय अस्पताल लेकर पहुंचे थे, लेकिन डॉक्टरों द्वारा मौत की पुष्टि किए जाने के बाद वे शव छोड़कर वहां से फरार हो गए। सूत्रों के मुताबिक आरोपियों ने बाद में थाने पहुंचकर खुद ही सरेंडर कर दिया था। हालांकि पुलिस ने दो दिनों तक उनकी गिरफ्तारी सार्वजनिक नहीं की।
इसी बीच आरोपियों के परिचितों ने सोशल मीडिया पर उनके पकड़े जाने की जानकारी साझा कर दी, जिसके बाद मामले की चर्चा तेज हो गई।

सूबेदार-एसआई के बाद अब एचसी-एएसआई का फिजिकल टेस्ट, भीषण गर्मी में दौड़ना पड़ सकता है भारी, 2022 के फिजिकल टेस्ट में जान गवां चुके हैं युवा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

एमपी में सूबेदार और पुलिस सब इंस्पेक्टर के बाद अब प्रधान आरक्षक कम्प्यूटर और सहायक उपनिरीक्षक कम्प्यूटर के पद पर भर्ती के लिए फिजिकल टेस्ट की तारीख का ऐलान कर दिया गया है, लेकिन भीषण गर्मी के दौरान होने वाले फिजिकल टेस्ट की इन दौड़ परीक्षाओं ने उम्मीदवारों के परिजनों की चिंता बढ़ा दी है। इसकी वजह साल 2022 में हुई फिजिकल टेस्ट परीक्षा के दौरान गर्मी के चलते दो युवाओं की मौत होना भी बताया जा रहा है। तब तत्कालीन गृह मंत्री डॉ नरोत्तम मिश्रा ने फिजिकल टेस्ट की परीक्षा टाइमिंग बदल दी थी। मप्र कर्मचारी चयन मंडल के परीक्षा परिणाम घोषित किए जाने के बाद पुलिस मुख्यालय ने पुलिस सब इंस्पेक्टर, सूबेदार 2025 के 500 पदों के लिए फिजिकल टेस्ट और साक्षात्कार की टाइमिंग 5 जून से 11 जून तय की है। यह टेस्ट भोपाल और जबलपुर में होने वाले हैं। अभी जबकि 42 से 45 डिग्री तापमान सभी जिलों में है तो इस फिजिकल परीक्षा की टाइमिंग बदलने की मांग उम्मीदवारों के परिजनों द्वारा की जा रही है। इस बीच पुलिस मुख्यालय ने आज प्रधान आरक्षक (कम्प्यूटर) एवं सहायक उप निरीक्षक (कम्प्यूटर) के कुल 89 पदों पर भर्ती के लिए ली गई परीक्षा के फिजिकल टेस्ट की तारीख भी तय कर दी है। यह परीक्षा 7 से 9 जून के बीच होने वाली है। इसकी टाइमिंग को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं।
प्रधान आरक्षक (कम्प्यूटर) एवं सहायक उप निरीक्षक (कम्प्यूटर) के कुल 89 पदों पर भर्ती के लिए मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल भोपाल द्वारा ऑनलाईन परीक्षा 24 मार्च और 25 मार्च को कराई गई थी। इस परीक्षा का परिणाम आने के बाद सफल उम्मीदवार की अगले चरण के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा होना है। उम्मीदवारों की 800 मीटर दौड़ एवं दस्तावेजों का परीक्षण भोपाल में लाल परेड ग्राउण्ड, जहांगीराबाद तथा जबलपुर के परेड ग्राउण्ड, 6वीं वाहिनी विसबल, रांझी में 7 जून से 9 जून 2026 तक होगा।
सहायक पुलिस महानिरीक्षक चयन और भर्ती गोपाल सिंह धाकड़ ने बताया कि ऑनलाइन परीक्षा में सफल उम्मीदवार म.प्र.कर्मचारी चयन मंडल की वेबसाइट से अपना सूचना पत्र डाउनलोड कर निर्धारित शारीरिक प्रवीणता परीक्षा स्थल पर पहुंचेंगे। सभी उम्मीदवारों को उनके लिए तय तारीख को ही पहुंचना आवश्यक है। विभिन्न चरणों में आधार ई-केवायसी सत्यापन कराया जाएगा। इसलिए अभ्यर्थी अपना आधार कार्ड साथ लेकर आएंगे।
इसके पहले 2022 में हुई भर्ती के दौरान शारीरिक दौड़ परीक्षा में गर्मी के चलते दो युवाओं की मौत हो गई थी। तब जबलपुर में पुलिस भर्ती के लिए हो रही दौड़ में बीमार पड़े एक युवक की मौत हुई थी। यह परीक्षा 9 मई से शुरू हुई थी लेकिन भीषण गर्मी और लू के कारण कैंडिडेट को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था।
बालाघाट निवासी 29 साल के इंदरकुमार लिल्हारे 10 मई को 800 मीटर की दौड़ पूरी करने के बाद बेहोश हो गया था। उसके नाक-कान से खून आने पर शहर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था जहां उसकी मौत हो गई थी। इसी तरह सिवनी निवासी 22 साल के नरेंद्र कुमार गौतम की मौत हो गई थी। वह भी 800 मीटर की दौड़ के बाद ही बेहोश हुआ था। इसके बाद पूर्व गृहमंत्री ने शारीरिक परीक्षा दौड़ की तारीख आगे बढ़ाई थी।

शांतिकुंज प्रतिनिधि एवं राष्ट्रीय प्रभारी गायत्री शक्तिपीठ भोपाल पहुंचे

भोपाल में 31 मई को होगा विशेष नशामुक्ति जागरूकता कार्यक्रम

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा संचालित "नशा मुक्ति अभियान" के अंतर्गत 31 मई को भोपाल में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज को नशामुक्त, स्वस्थ एवं संस्कारित बनाने हेतु व्यापक जनजागरण करना है। कार्यक्रम की तैयारियों के दौरान शांतिकुंज प्रतिनिधि एवं राष्ट्रीय प्रभारी आदरणीय श्री के.पी. दुबे जी गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल पहुँचे, जहाँ उन्होंने आयोजन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन के माध्यम से युवाओं एवं समाज को नशे से दूर रहने तथा सकारात्मक एवं संस्कारित जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया।। इस अवसर पर जोन समन्वयका श्री राजेश पटेल ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए क्षेत्रीय लोगों से पहुंचने का आवाहन किया। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर सायं 6:00 बजे गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल में कार्यकर्ताओं द्वारा मशाल जलाकर एकजुटता एवं संकल्प का प्रदर्शन किया गया। यह आयोजन समाज में नशामुक्ति के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से किया गया। 31 मई को आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रम में विशाल जनजागरण रैली, मानव श्रृंखला एवं नशामुक्ति संकल्प जैसे विभिन्न आयोजन किए जाएंगे। कार्यक्रम में युवाओं, महिलाओं, विद्यार्थियों एवं समाज के सभी वर्गों की सक्रिय सहभागिता रहेगी। आयोजकों ने सभी श्रद्धालुओं, परिजनों एवं नागरिकों से परिवार सहित अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है। गायत्री परिवार के अनुसार, इस अभियान के माध्यम से समाज में स्वास्थ्य, संस्कार एवं सकारात्मक चेतना के प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

मप्र सरकार ने स्थापित किए 8 नए पुरस्कार, नानाजी के नाम राष्ट्रीय, गौर के नाम राज्य स्तरीय

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मप्र सरकार ने विज्ञान, सामाजिक शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए 8 नए पुरस्कार स्थापित किए हैं। इनमें 4 राष्ट्रीय और 4 राज्य स्तरीय पुरस्कार शामिल हैं। सामाजिक शोध को लेकर मध्यप्रदेश को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले और चित्रकूट में दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) के संस्थापक नानाजी देशमुख के नाम पर राष्ट्रीय स्तर का तथा सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरिसिंह गौर के नाम पर राज्य स्तरीय सामाजिक विज्ञान पुरस्कार स्थापित किया गया है। विज्ञान भारती के पूर्व राष्ट्रीय संगठन सचिव जयंत राय सहस्त्रबुद्धे के नाम पर विज्ञान के लोकव्यापीकरण का राष्ट्रीय पुरस्कार और भीमबैठका की खोज करने वाले पुरातत्वविद् डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के नाम पर राज्य स्तरीय देशज विज्ञान पुरस्कार दिया जाएगा।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अनुसार राष्ट्रीय पुरस्कारों में 5 लाख व राज्य स्तरीय में 2 लाख रुपए की सम्मान राशि दी जाएगी। पुरस्कार वर्ष 2024-25 से लागू होंगे। 11 जुलाई तक ऑनलाइन व ऑफलाइन आवेदन किए जा सकेंगे। चयन प्रक्रिया अक्टूबर से दिसंबर के बीच पूरी की जाएगी।

राष्ट्रीय पुरस्कार... विज्ञानः डॉ. सीवी. रमन पुरस्कार, इंजीनियरिंग व तकनीकः डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम पुरस्कार सामाजिक विज्ञानः नानाजी देशमुख पुरस्कार

राज्य स्तरीय पुरस्कार विज्ञानः आचार्य वराह मिहिर पुरस्कार, इंजीनियरिंग व तकनीकः डॉ. एम विश्वेश्वरैया पुरस्कार, सामाजिक विज्ञानः डॉ. हरिसिंह गौर पुरस्कार देशज विज्ञानः डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरस्कार।

दिल्ली में नितिन नबीन से मिले खंडेलवाल, राज्यसभा की तीसरी सीट पर भाजपा प्रत्याशी नहीं उतारेगी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

प्रदेश में खाली हो रही तीन राज्यसभा सीटों पर होने वाले आगामी चुनावों को लेकर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने बुधवार को दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन और राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष से मुलाकात की। राष्ट्रीय नेतृत्व के निर्देश पर मप्र की ओर से कैटेगरी वाइज 15 नामों का पैनल राष्ट्रीय अध्यक्ष और राष्ट्रीय संगठन महामंत्री को सौंपा गया है। इसमें प्रमुख रूप से नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का नाम शामिल है। राष्ट्रीय नेतृत्व ने संकेत दिए हैं कि पार्टी का फिलहाल मप्र में तीसरी सीट पर उम्मीदवार उतारने का कोई मन नहीं हैं। इसलिए इसको लेकर प्रदेश स्तर से कोई बयानबाजी ना की जाए। भाजपा सूत्रों के मुताबिक अन्य नामों में अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य, पूर्व मंत्री अरविंद भदौरिया, समेत सामान्य, ओबीसी, एससी और एसटी वर्ग से अलग-अलग नाम दिए गए हैं। गौरतलब है कि राज्यसभा चुनावों के लिए 1 जून से 8 जून के बीच नामांकन होना है। जबकि 18 जून को मतदान होगा।

सीएस बोले- ये कैसा सुशासन है, जनसुनवाई में लोग जहर खा रहे, खनन माफियाओं में खौफ नहीं

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जनसुनवाई में लोग जहर खा रहे हैं, आत्मदाह कर रहे हैं। अवैध खनन करने वालों पर पुलिस-प्रशासन का खौफ नहीं है। ऐसे कैसे कोई भी व्यक्ति ट्रैक्टर या बाइक चढ़ा देने की हिम्मत कर सकता है? ये कैसा सुशासन है? कलेक्टर-एसपी की जिम्मेदारी है कि ऐसा करने वालों पर सख्त एक्शन लें, ताकि ऐसी घटनाएं न हों। प्रदेश की प्रशासनिक सुस्ती और बिगड़ती कानून व्यवस्था पर मुख्य सचिव (सीएस) अनुराग जैन ने बुधवार को कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस में ऐसा सख्त रुख दिखाया। सीएस ने कलेक्टर-एसपी से कहा कि अगर एक भी गाड़ी अवैध परिवहन करते हुए पकड़ी गई या बिना नंबर प्लेट/टूटी नंबर प्लेट के मिले, तो उसे सिर्फ जब्त नहीं, बल्कि सीधे राजसात कर तुरंत नीलाम किया जाए। पुराने खनन माफियाओं की फाइलें दोबारा खोलें।

पता लगाएं कि किन मामलों में अब तक सजा हुई है और यदि सजा नहीं हुई है तो तुरंत औपचारिकता पूरी कर सजा दिलाने के प्रयास किए जाएं। पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना ने पुलिस अधीक्षकों से कहा कि शैक्षणिक संस्थानों के पास फैले ड्रग्स के जाल को नेस्तनाबूद कर 'ड्रग फ्री जोन' बनाएं। पोक्सो एक्ट व विस्फोटक अधिनियम का उल्लंघन करने वालों को कतई न बख्शें। शांति भंग करने वाले और हुड़दंगियों से सख्ती से निपटें।

मुख्य सचिव ने राजस्व विभाग की समीक्षा के दौरान भोपाल कलेक्टर प्रियंक मिश्रा को जमीनों के नामांतरण बंटान के मामलों में बढ़ती पेंडेंसी व समीक्षा नहीं किए जाने पर फटकार लगाई। वहीं प्रदूषण, पेयजल संकट और कानून व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिए जाने पर सिंगरौली कलेक्टर गौरव बैनल की जमकर क्लास लगाई। सीएस ने कहा कि अब गुजरे जमाने के ढर्रे पर काम नहीं चलेगा। हर जिले को अपनी अर्थव्यवस्था खुद खड़ी करनी होगी, वरना जवाबदेही तय की जाएगी। सीएस ने दो टूक कहा कि लोक सेवा गारंटी, सीएम हेल्पलाइन और जनसुनवाई में अगर आम जनता के साथ संवेदनहीनता बरती गई, तो अधिकारियों पर गाज गिरना तय है।

क्योंकि यह तीनों से सरकार की छवि बनती बिगड़ती है। औद्योगिक नीति की समीक्षा में मुख्य सचिव ने कलेक्टर्स को अपनी नाकामी छुपाने के बजाय कृषि और उद्यानिकी के साथ तालमेल बिठाकर जिलों में औद्योगिक माहौल बनाने का टास्क दिया। उन्होंने याद दिलाया कि जीएसडीपी में कृषि का योगदान भले ही 37 से बढ़कर 43% हो गया है, लेकिन औद्योगिक विकास के बिना जिलों का भला नहीं होगा।

स्वच्छता और विकास में कोताही पर नपेंगे अफसर शहरी और ग्रामीण विकास की समीक्षा में प्रधानमंत्री आवास योजना की कछुआ चाल पर नाराजगी जताई गई। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छता को लेकर सर्वोच्च न्यायालय की गाइडलाइन का हर स्तर पर कड़ाई से पालन करने की चेतावनी दी गई है। पानी की सुरक्षित आपूर्ति और जल गंगा संवर्धन अभियान के बचे हुए काम 21 जून से पहले हर हाल में पूरे करने होंगे।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

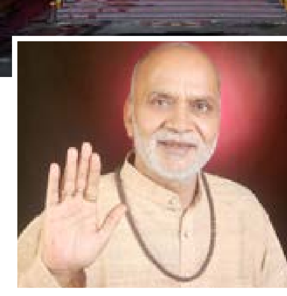
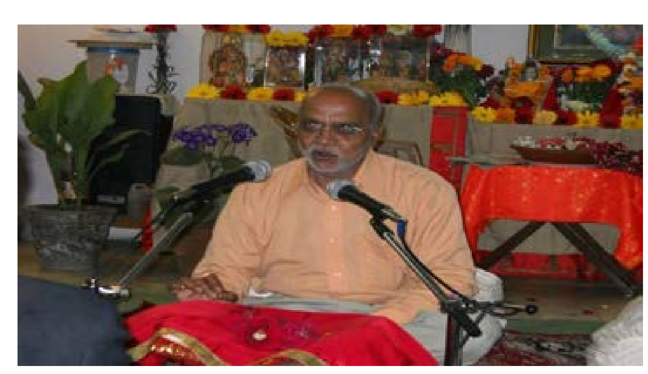

दादाजी गुरुदेव श्री चुन्नीलाल नामदेव जी के पूज्य पिताश्री श्री नर्मदा प्रसाद नामदेव ग्राम साईंखेड़ा, तहसील गाडरवारा, जिला नरसिंहपुर के निवासी थे। वे स्वभाव से अत्यंत अनुशासनप्रिय एवं तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। कभी-कभी वे दादाजी को कठोर शब्दों में समझाते भी थे, किन्तु उनके प्रत्येक व्यवहार के पीछे अपने पुत्र के उज्ज्वल भविष्य एवं श्रेष्ठ संस्कारों की भावना निहित रहती थी। दादाजी गुरुदेव की पूज्य माताश्री श्रीमती मीराबाई नामदेव अत्यंत शांत, सरल, धार्मिक एवं करुणामयी स्वभाव की थीं। परिवार में धर्म, सेवा, संस्कार एवं भक्ति का वातावरण माता-पिता के आचरण से ही निर्मित हुआ। दादाजी गुरुदेव अपने माता-पिता से अत्यंत प्रेम एवं श्रद्धा रखते थे। वे अपने पिताजी के प्रत्येक आदेश को ईश्वर की आज्ञा मानकर उसका पालन करते थे। उन्होंने कभी भी माता-पिता की बातों का विरोध नहीं किया तथा सदैव उनके चरणों में श्रद्धा भाव अर्पित किया। दादाजी का मानना था कि माता-पिता ही जीवन के प्रथम गुरु एवं प्रत्यक्ष देवता होते हैं। जो संतान अपने माता-पिता का सम्मान करती है, सेवा करती है एवं उनके प्रति समर्पण भाव रखती है, उस पर ईश्वर की विशेष कृपा बनी रहती है। दादाजी गुरुदेव अपने भक्तों एवं समाज के लोगों को सदैव यह प्रेरणा देते थे कि प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर माता-पिता के चरण स्पर्श करना चाहिए, उनसे प्रेमपूर्वक बात करनी चाहिए तथा उनके आशीर्वाद को जीवन की सबसे बड़ी पूंजी मानना चाहिए। उनका संदेश था कि माता-पिता की सेवा से घर में सुख, शांति, समृद्धि एवं सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है। जिस घर में माता-पिता का सम्मान होता है, वहां ईश्वर स्वयं निवास करते हैं। आज के समय में मनुष्य नौकरी, व्यवसाय एवं सांसारिक व्यस्तताओं में इतना उलझ गया है कि अनेक बार माता-पिता के लिए समय निकालना कठिन प्रतीत होता है। किन्तु दादाजी गुरुदेव समझाते थे कि जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों के जन्म से लेकर उनके पालन-पोषण, शिक्षा, संस्कार एवं जीवन निर्माण तक हर सुख-दुख में साथ खड़े रहते हैं, उसी प्रकार संतान का भी यह परम कर्तव्य है कि वृद्धावस्था में माता-पिता का आदर, सेवा एवं देखभाल करे।

माता-पिता अपने बच्चों की मुस्कान के लिए अपने अनेक सपनों एवं इच्छाओं का त्याग कर देते हैं। वे स्वयं कठिनाइयों में रहकर भी अपने बच्चों को सुख-सुविधाएं प्रदान करते हैं। संतान के जीवन को उज्ज्वल बनाने के लिए वे दिन-रात परिश्रम करते हैं। बच्चों की छोटी से छोटी आवश्यकता को पूरा करने के लिए माता-पिता अपना सर्वस्व अर्पित कर देते हैं। इसलिए जब माता-पिता वृद्ध हो जाएं, तब उन्हें प्रेम, सम्मान, सहारा एवं अपनापन देना प्रत्येक संतान का सबसे बड़ा धर्म है। दादाजी गुरुदेव कहा करते थे कि यदि मनुष्य अपने माता-पिता का हृदय से सम्मान करता है, उनकी सेवा करता है तथा उन्हें कभी दुख नहीं पहुंचाता, तो जीवन के अनेक कष्ट ईश्वर की कृपा से स्वतः दूर होने लगते हैं। सुख और दुख जीवन का स्वाभाविक क्रम है, किन्तु जो व्यक्ति ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखते हुए माता-पिता की सेवा करता है, उसके जीवन में आध्यात्मिक शक्ति एवं आत्मिक शांति का संचार होता है। दादाजी गुरुदेव का जीवन स्वयं इस दिव्य संदेश का श्रेष्ठ उदाहरण था। उन्होंने अपने आचरण से यह सिद्ध किया कि माता-पिता की सेवा ही सच्ची भक्ति, सच्चा धर्म एवं ईश्वर प्राप्ति का सरल मार्ग है। जो संतान अपने माता-पिता को सम्मान देती है, वह वास्तव में ईश्वर की कृपा एवं आशीर्वाद की अधिकारी बनती है।

जिमखाना पर इतना क्या शोक मनाना!

जिमखाना क्लब की 27.3 एकड़ जमीन की लीज केंद्र सरकार ने समाप्त कर दी है और क्लब को नोटिस भेज दिया गया है कि पांच जून तक इसे खाली कर दिया जाए। आधिकारिक रूप से कहा गया है कि सुरक्षा की दृष्टि से कुछ बुनियादी ढांचे का निर्माण होना है, जिसके लिए सरकार को यह जमीन चाहिए। दूसरी ओर क्लब के सदस्य इस नोटिस के खिलाफ अदालत पहुंचे हैं। हालांकि किसी को असल कारण पता नहीं है कि जिमखाना क्लब क्यों हटाया जा रहा है। इसलिए सब अपनी तरफ से कोई न कोई कारण बता रहे हैं। पहले उनकी बात करते हैं, जो फैसले के खिलाफ हैं और इसे हटाए जाने के कारण बता रहे हैं। जैसे किसी ने कहा कि प्रधानमंत्री हमेशा अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं इसलिए वे जिमखाना क्लब को प्रधानमंत्री के आवासीय कॉम्पलेक्स के अंदर लेना चाहते हैं। किसी ने कहा कि जिमखाना क्लब में होने वाली पार्टियों से लोक कल्याण मार्ग में रहने वालों को परेशानी होती है। इसलिए खाली कराया जा रहा है। इसके आगे किसी ने कहा कि मौजूदा निजाम के कुछ बड़े लोगों को सदस्यता नहीं मिली, जबकि राहुल गांधी इसके सदस्य हैं इस खुन्नस में खाली कराया जा रहा है। किसी ने कहा कि पुरानी तमाम चीजों से मौजूदा सत्ता को परेशानी है इसलिए खाली कराया जा रहा है। इसके बरक्स एक समूह ऐसे लोगों का है, जो इसे हटाए जाने का स्वागत कर रहे हैं। उनमें से किसी ने कहा कि यह ब्रिटिश साम्राज्य की निशानी है इसलिए इसको हटाया जाना चाहिए। किसी ने कहा कि अंग्रेजों ने भारतीयों को अपमानित करने के लिए ऐसे क्लब बनाए थे और ये क्लब गुलामी का प्रतीक हैं इसलिए इनको हटा दिया जाना चाहिए। फिर किसी ने इसमें जोड़ा कि वामपंथी लोगों के बौद्धिक विलास का अड्डा है इसलिए हटना चाहिए। कुछ लोगों ने कहा कि दारूबाजी का अड्डा है इसलिए हटना चाहिए। दिल्ली सरकार के एक मंत्री ने कहा कि किसानों से जमीन मांगी जाती है तो वे दे देते हैं इसलिए एलिट जमात को भी इसे खाली कर देना चाहिए। इस तरह राजधानी दिल्ली में पिछले कुछ दिनों से इस बात पर चकल्लस है कि जिमखाना क्लब रहना चाहिए या हटना चाहिए। सरकार के लिए यह चकल्लस बहुत सुविधाजनक है क्योंकि इससे अटेंशन डिवाइड होता है। पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी, महंगाई, नीट पेपरलीक, 12वीं के छात्रों की परेशानियों आदि के बीच जब जिमखाना जैसे मुद्दे आ जाते हैं तो सरकार के लिए ठीक ही रहता है। हो सकता है कि इसे हटाने का फैसला पहले से किया गया हो। लेकिन नोटिस भेजने की टाइमिंग तो निश्चित रूप से अटेंशन डिवाइड करने की योजना का हिस्सा है। यह बहुत दिलचस्प है कि जिमखाना क्लब हटाने के पक्ष में जो तर्क दिए जा रहे हें वो बेहद लचर और बचकाने हैं। जैसे सबसे मजबूत तर्क यह है दिल्ली के एलिट लोगों का, विशेषाधिकार प्राप्त समूह का क्लब है, जहां आम आदमी की एंट्री नहीं है। और इसलिए इसका कोई वास्तविक लाभ नहीं है। इस तर्क के आधार पर तो दिल्ली के सारे क्लब बंद हो जाएंगे क्योंकि सब अभिजात्य और विशेषाधिकार प्राप्त समूहों के लिए ही हैं। कस्तूरबा गांधी मार्ग पर एक और विनय मार्ग पर दो बड़े क्लब हैं। सीएसओई क्लब, जो दिल्ली और भारत सरकार के अधिकारियों के लिए हैं। वहां भी आम आदमी की एंट्री नहीं होती है। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर और इंडिया हैबिटेट सेंटर में भी आम आदमी की एंट्री नहीं होती है। रायसीना रोड पर चेम्सफोर्ड क्लब और जनपथ पर मैसोनिक क्लब में भी आम आदमी नहीं जा सकता है। दिल्ली गोल्फ क्लब भी एक्सक्लूसिव है, एयरपोर्ट ऑथोरिटी का क्लब और रफी मार्ग पर स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब भी विशिष्ठ लोगों के लिए ही है। तो क्या इस आधार पर कि इन क्लबों में कुछ सार्थक नहीं होता है, ये मनोरंजन की जगह हैं और आम आदमी की एंट्री नहीं होती है इसलिए इन सबको हटा दिया जाए? पूर्व सांसदों के लिए संसद से लेकर कांस्टीट्यूशन क्लब तक बैठने की जगह है, पूर्व सैन्य अधिकारियों के लिए सशस्त्र बलों के मेस हैं और अर्धसैनिक बलों के लिए भी है लेकिन पूर्व अधिकारियों के लिए कोई एलीट क्लब नही हो सकता है! इसी तरह का एक तर्क ब्रिटिश काल में बने होने का है। इसका क्या अर्थ है? ब्रिटिश काल में बना था तो क्या अंग्रेज इसके लिए अपनी जमीन, अपना ईट, बालू, सीमेंट लेकर आए थे? क्या उनके मजदूर इसे बनाने आए थे? भारत की जमीन पर, भारत के पैसे से, भारत के मजदूरों के खून, पसीने से ही इसका निर्माण हुआ। अगर इस तर्क को मानें कि अंग्रेजी राज की सारी निशानी मिटा देनी है तो फिर लुटियन की दिल्ली के सारे बंगलों को भी तोड़ना पड़ेगा। इंडिया गेट से लेकर गेटवे ऑफ इंडिया तक को ध्वस्त करना होगा। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया से लेकर महापंजीयक तक की संस्थाओं को समाप्त करना होगा क्योंकि वह सब भी अंग्रेजों ने बनाया था। एक बेहूदा तर्क यह है कि जिमखाना क्लब दारू का अड्डा है और प्रधानमंत्री के आवास के पास ऐसा अड्डा नहीं चलने दिया जा सकता है। यह तर्क सरकार के एक सलाहकार महोदय की ओर से सबसे जोर शोर से दिया जा रहा है। अगर दारू का अड्डा के नाम पर इसे हटाने का फैसला होगा तो प्रेस क्लब और चेम्सफोर्ड क्लब का क्या होगा, जो संसद भवन के ठीक सामने हैं? प्रधानमंत्री आवास से ज्यादा शुचिता तो संसद भवन की होनी चाहिए! इस तर्क से तो सशस्त्र बलों से लेकर अर्धसैनिक बलों के लिए बने मेस तक को दारू का अड्डा घोषित किया जा सकता है। क्या सलाहकार महोदय को पता है कि और लुटियन की दिल्ली के अनेक बंगले होंगे, जहां दारू पी जाती होगी या दारू पार्टी होती होगी। कई बंगले प्रधानमंत्री आवास के आसपास ही होंगे। तो क्या इस आधार पर सबको तोड़ दिया जाए? वैसे यह सवाल भी है कि अगर अधिकारियों, पूर्व अधिकारियों या एलीट के लिए 27 एकड़ का क्लब नहीं हो सकता है तो केंद्र सरकार के मंत्री तीन तीन एकड़ के बंगलों में क्यों रहेंगे? उस जगह का भी तो सार्वजनिक इस्तेमाल हो सकता है! हां, सुरक्षा का मामला हो सकता है। प्रधानमंत्री की सुरक्षा सबसे ऊपर है। अब स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप यानी एसपीजी सिर्फ प्रधानमंत्री की ही सुरक्षा के लिए है। पहले तो पूर्व प्रधानमंत्रियों और उनके परिजनों को भी एसपीजी की सुरक्षा मिलती थी लेकिन अब यह सिर्फ प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए है। यह संयोग है कि आजादी के बाद से प्रधानमंत्री वहीं रहे, जहां जिमखाना क्लब है। तीन मूर्ति हो या एक, सफदरजंग हो या सात, लोक कल्याण मार्ग हो, सब जिमखाना के आसपास ही हैं और कभी इसकी वजह से कोई सुरक्षा चुनौती पैदा हुई हो इसकी खबर नहीं है। ऊपर से प्रधानमंत्री तो अब वहां से शिफ्ट भी होने वाले हैं। प्रधानमंत्री इन्क्लेव का निर्माण कार्य चल रहा है, जो 15 एकड़ में बन रहा है। इसलिए सुरक्षा का मामला भी ज्यादा तार्किक नहीं लग रहा है। कुल मिला कर कर निष्कर्ष यह है कि प्रधानमंत्री को लगा कि जिमखाना बंद कर देना चाहिए तो बंद हो जाएगा। जैसे यह लगा कि नया संसद भवन बनना चाहिए तो बना। लगा कि इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर ऑफ आर्ट एंड कल्चर या निर्माण भवन आदि टूटने चाहिए तो सब टूट गए। योजना आयोग का नाम नीति आयोग होना चाहिए तो हो गया। यह तो प्रधानमंत्री की मर्जी है। कभी किसी प्रधानमंत्री को लगेगा कि ललित कला अकादमी या संगीत नाटक अकादमी या साहित्य अकादमी आदि अनुत्पादक जगहें हैं और एलिट जमात के बौद्धिक विलास का अड्डा हैं तो वह उनको तुड़वा देगा। उनकी जगह अपने हिसाब से वह कुछ ज्यादा उपयोगी निर्माण कराएगा। यह सब तो चलता रहता है। इससे समस्या नहीं है। समस्या इसको जस्टिफाई करने के लिए दिए जाने वाले तर्कों से है। दूसरी ओर जिमखाना क्लब न हटाया जाए इसके तर्क भी बहुत बचकाना और अतार्किक हैं। उनमें कोई दम नहीं है। वहां खेल कूद का आयोजन होता है या 50 फीसदी सदस्य सेना के रिटायर लोग हैं या सरकार से रिटायर लोग वहां के सदस्य हैं, यह ऐतिहासिक है आदि आदि। इनका कोई अर्थ नहीं है। हां, यह अवश्य है कि हजारों साल से नगर सभ्यताओं में इस तरह के क्लब या मनोरंजन की जगहें बनती रही हैं। रोम का कोलोसियम तो मानव सभ्यता के सबसे अमानवीय मनोरंजन माध्यम की जगह था, जहां रोम के अमीर लोग ग्लैडियटर्स की लड़ाई देखने जाते थे। लेकिन हजारों साल से उसे भी संभाल कर रखा गया है और दुनिया भर के लोग उसे देखने जाते हैं। सिंधु घाटी की सभ्यता में सामूहिक स्नानागार थे, संभ्रात लोगों के लिए थे। असल में हर सभ्यता में नगर का एक लैंडस्केप होता है, जिसमें उस सभ्यता के एलीट लोगों के लिए मनोरंजन की जगहें होती हैं तो सबसे गरीब लोगों के लिए भी जगह होती है। दिल्ली में भी जिमखाना क्लब है तो सैकड़ों अनियमित कॉलोनियां हैं और हजारों झुग्गियां भी हैं। प्रधानमंत्री आवास के आसपास भी कई झुग्गियां हैं। इतिहास बोध और सौंदर्य बोध के साथ साथ इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

–अजीत द्विवेदी

इजराइल का पेच है!

ईरान के पड़ोसी देशों का अहसास है कि मौजूदा लड़ाई ने उस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को बदल दिया है। उन्हें यह अंदेशा भी है कि ईरान की निर्णायक हार नेतन्याहू की 'ग्रेटर इजराइल' की महत्त्वाकांक्षा को बल प्रदान करेगी। अमेरिका- ईरान युद्ध खत्म होने के बारे में रविवार को गुजरते हुए पहर के साथ माहौल बदला। सुबह समझौता करीब दिखा। खुद डॉनल्ड ट्रंप ने बताया कि मूल बिंदुओं पर रजामंदी हो गई है। उन्होंने समझौते की कुछ शर्तों को सार्वजनिक भी कर दिया। तब तेहरान स्थित सूत्रों के हवाले से बताया गया कि अमेरिकी अधिकारियों ने यह कहते हुए ईरान से ट्रंप के सोशल मीडिया पोस्ट को नजरअंदाज करने का अनुरोध किया है कि ट्रंप घरेलू दबाव में हैं और इसलिए वे 'जीत' की मुनादी सुना रहे हैं! बहरहाल, दोपहर होते-होते ट्रंप का नया पोस्ट सामने आ गया, जिसमें उन्होंने कहा कि अमेरिका को समझौते की कोई जल्दबाजी नहीं है, क्योंकि "समय हमारे पक्ष में" है। और शाम ढलते ही उन्होंने नए हमलों की धमकी ईरान को दे डाली। इस बीच अमेरिका में समझौते की ज्ञात शर्तों को लेकर भारी बवाल मचा। इजराइल समर्थक लॉबी और उससे जुड़े रिपब्लिकन नेताओं ने इसके खिलाफ मोर्चा खोल दिया। इजराइल ने भी साफ संदेश दिया कि ईरान की परमाणु क्षमता को शून्य किए बिना कोई समझौता उसे मंजूर नहीं होगा। जबकि सहमति इस पर बनी थी कि फिलहाल ईरान होरमुज जलमार्ग को खोलेगा, जिसके बदले में अमेरिका ईरान की जब्त संपत्तियां लौटाएगा। यूरेनियम संवर्धन का मुद्दा बाद में अंतिम समझौते के लिए होने वार्ता में शामिल होगा। ईरानी सूत्रों ने बताया कि होरमुज खोलने की तय हुई शर्त को भी ट्रंप ने गलत ढंग से पेश किया। इन सबका परिणाम हुआ कि सुबह जगी उम्मीद शाम तक ध्वस्त हो गई। सुबह का एलान ह्वाइट हाउस में हुई उस बैठक के बाद हुआ था, जिसमें मध्य-पूर्व के सात देशों और पाकिस्तान के प्रतिनिधि भी जुड़े थे। ये सभी देश तुरंत शांति चाहते हैं। उन्हें शायद इसका अहसास है कि 39 दिन की लड़ाई ने उस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को बदल दिया है। फिर उन्हें यह अंदेशा भी है कि ईरान की निर्णायक हार बेंजामिन नेतन्याहू की 'ग्रेटर इजराइल' की महत्त्वाकांक्षा को बल प्रदान करेगी। तो उनकी दलीलों के सामने ट्रंप समझौते के लिए राजी हुए। मगर बाद में इजराइल लॉबी ने पेच फंसा दिया।

चेहरा बदलना काफी है!

घरेलू बाजार पर ध्यान केंद्रित कर अर्थव्यवस्था को दिशा देने की क्षमता भारतीय राज्य ने विकसित की होती, तो क्या संकट इतना गहराता? व्यक्तियों पर बात केंद्रित कर नीतियों पर पुनर्विचार से बचते हुए आखिर हम कहां पहुंचेंगे? देश गहरे आर्थिक संकट में है, इससे अब केंद्र भी इनकार नहीं कर रहा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने तीन 'एफ' (फ्युअल, फर्टिलाइजर और फॉरेन एक्सचेंज) से जुड़ी चुनौतियां को लेकर आगाह किया है। वैसे, प्रधानमंत्री ने जब नागरिकों से 'देशभक्ति' दिखाते हुए सोना ना खरीदने या विदेश जाने से बचने का आह्वान किया, तो उसका अर्थ यही था कि सरकार स्थिति को संभालने में खुद को अक्षम पा रही है। मुद्दा है कि यह संकट क्यों आया? नरेंद्र मोदी सरकार के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रह्मण्यम ने कहा है कि अर्थव्यवस्था संचालन के प्रभारियों को बदल दिया जाना चाहिए। सुब्रह्मण्यम और उनकी तरह की सोच वाले विशेषज्ञ मानते हैं कि नीति के मोर्चे पर करने के लिए सरकार के पास ज्यादा कुछ नहीं है। जीएसटी को सरल बनाने, श्रम कानूनों को 'सुधार कर विवेकसंगत' बनाने, एफडीआई के लिए नए क्षेत्रों को खोलने और यूरोपियन यूनियन जैसे पक्षों के साथ मुक्त व्यापार समझौता करने के कदम वह पहले ही उठा चुकी है। फिर भी "निवेशकों का भरोसा बहाल नहीं हुआ" और हालात बदतर हुए हैं, तो क्यों? सुब्रह्मण्यम के मुताबिक इसलिए कि नियमन को अन्य निवेशकों की कीमत पर कुछ बड़े कॉरपोरेट घरानों के पक्ष में झुका दिया गया है, संसाधन आवंटन या निवेश स्थल तय करने में विपक्ष शासित राज्यों पर भाजपा शासित राज्यों को तरजीह दी जाती है, राजनीतिक विरोधियों और मनोनुकूल ना चलने वाले बिजनेस घरानों को सताया जाता है, टैक्स कानून लागू करने में मनमानी की जाती है, और संघीय ढांचे की अनदेखी की जा रही है। यह नहीं कहा जा सकता कि ये वजहें अहम नहीं हैं। फिर भी सवाल यह है कि जब आयात निर्भर मैनुफैक्चरिंग और निर्यात उन्मुख कारोबार के लिए बाहरी कारणों से स्थितियां प्रतिकूल हो रही हों, तो क्या अर्थव्यवस्था की बुनियादी दिशा पर पुनर्विचार की जरूरत नहीं है? घरेलू बाजार पर ध्यान केंद्रित कर भारतीय राज्य ने अर्थव्यवस्था को दिशा देने की अपनी क्षमता विकसित की होती, तो क्या आज हम ऐसे संकट में होते? व्यक्तियों पर बात केंद्रित कर नीतियों पर पुनर्विचार से बचते हुए आखिर हम कहां पहुंचेंगे?

इंडिया' ब्लॉक की बैठक में किसकी दिलचस्पी!

विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' ब्लॉक की बैठक इस महीने होने वाली थी। अप्रैल में लोकसभा के तीन दिन के विशेष सत्र के बाद तय हुआ था कि मई में पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद विपक्ष के नेताओं की एक बैठक होगी। इसमें सब एक दूसरे का धन्यवाद कहने वाले थे। तय हुआ था कि जिस तरह की एकता नारी शक्ति वंदन कानून में संशोधन के लिए लाए गए बिल पर विपक्ष ने दिखाई थी वैसी ही एकजुटता हमेशा दिखाई जाएगी। इस पर ममता बनर्जी के नेता भी सहमत थे। लेकिन जैसे ही नतीजे आए वैसे ही सबका जोश ठंडा पड़ गया। मई का महीना बीत रहा है और किसी को बैठक की जल्दी नहीं है। इस बीच ममता बनर्जी ने कहा है कि विपक्षी गठबंधन के नेता जून में मीटिंग कर सकते हैं। हालांकि यह एक शुरुआती बयान है। बैठक कहां होगी, कौन कोऑर्डिनेट करेगा और इसका एजेंडा क्या होगा यह अभी तय नहीं है। असल में अप्रैल के महीने में तृणमूल कांग्रेस के नेता पश्चिम बंगाल की जीत को लेकर इतने आश्वस्त थे कि वे कांग्रेस और दूसरी विपक्षी पार्टियों की हर बात मान रहे थे। तभी उन्होंने विपक्षी गठबंधन की मीटिंग पर हामी भर दी

थी। उनको लग रहा था बंगाल जीत कर आएंगी ममता बनर्जी तो दिल्ली में उनका भव्य स्वागत होना चाहिए और इससे बड़ा मंच क्या हो सकता है कि विपक्ष के सारे नेता एकजुट हों और वहां ममता की तारीफ हो! जिस तरह से ममता बनर्जी के नेता आश्वस्त थे उसी तरह से एमके स्टालिन के नेता भी तमिलनाडु में जीत के लिए आश्वस्त थे। उनको भी लग रहा था कि वे चुनाव जीत रहे हैं। सारे सर्वेक्षण डीएमके की जीत का अनुमान लगा रहे थे। सो, स्टालिन के लोगों ने भी हामी भर दी और यह तय हो गया था कि मई के महीने में दिल्ली में विपक्षी गठबंधन की बैठक होगी। लेकिन नतीजे पूरी तरह से उलट गए। न सिर्फ ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस हारी, बल्कि स्टालिन की पार्टी भी हार कर सत्ता से बाहर हो गई। बंगाल में भाजपा का जीतना और तमिलनाडु में डीएमके का हारना विपक्ष के लिए बड़ा झटका था। सो, नतीजों के बाद होने वाली बैठक की फिर चर्चा नहीं हुई। चुनावी हार के कारण इसके पीछे एक वजह यह भी है कि कांग्रेस ने बीच चुनाव में ममता बनर्जी के खिलाफ अनापशनाप भाषण दिया। उन्होंने बंगाल जाकर कहा कि ममता की पार्टी ने भाजपा की बंगाल में एंट्री कराई। उन्होंने ममता पर भाजपा से मिलीभगत का आरोप लगाया। उधर तमिलनाडु में चुनाव नतीजे आते ही कांग्रेस ने जिस तरह से डीएमके को छोड़ कर टीवीके को समर्थन दिया वह भी हैरान करने वाला था। कांग्रेस के सिर्फ पांच विधायक जीते हैं लेकिन वह उसी दम पर 60 साल के बाद सरकार में शामिल हो गई है। इसके बाद डीएमके ने लोकसभा स्पीकर को चिट्ठी लिख कर सदन में अलग बैठने की व्यवस्था करने को कहा। इस तरह डीएमके और कांग्रेस का संबंध बिगड़ा है तो ममता बनर्जी के साथ भी कांग्रेस के संबंध अच्छे नहीं हैं। कांग्रेस ने अभी केरल में लेफ्ट को रिप्लेस करके अपनी सरकार बनाई है। उधर जब से बंगाल में ममता बनर्जी की पार्टी हारी है तब से झारखंड में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपने विकल्पों पर नए सिरे से विचार कर रहे हैं। महाराष्ट्र में शरद पवार अब खुल कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करने लगे हैं। अगर दोनों एनसीपी एक होते हैं तो उनका एनडीए का साथ रहना तय है। इस तरह गिनी चुनी पार्टियों को छोड़ कर विपक्ष की ज्यादातर पार्टियां अभी अलग अलग राजनीति कर रही हैं। ऐसे में विपक्षी गठबंधन की कौन नेता या कौन सी पार्टी एकजुटता दिखाने या बैठक करने में दिलचस्पी लेगी? फिर भी ममता बनर्जी ने कहा है कि जून में बैठक होगी तो देखते हैं।

राज्यसभा की तस्वीर ज्यादा नहीं बदलेगी!

राज्यसभा के इस बार के दोवार्षिक चुनाव की खास बात यह है कि ये तीन चरणों में हो रहा है। पहले चरण में अप्रैल में 37 सीटों पर चुनाव हुआ। अब दूसरे चरण में जून में 24 सीटों पर चुनाव होगा और तीसरे चरण में साल के अंत में नवंबर में उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड की 10 सीटों पर चुनाव होगा। इस तरह कुल 72 सीटों पर इस साल चुनाव है। दूसरे चऱण की 24 सीटों के साथ दो सीटों पर उपचुनाव का ऐलान भी हुआ है। महाराष्ट्र में सुनेत्रा पवार के इस्तीफे से खाली हुई सीट पर उपचुनाव होगा और तमिलनाडु में सीवी षणमुगम के इस्तीफे से खाली हुई सीट पर भी उपचुनाव होगा। ये दोनों लोग विधायक बन गए हैं।

अगले महीने जिन 24 सीटों पर चुनाव होने वाले हैं उनमें से 18 सीटें भाजपा की हैं और कांग्रेस की सिर्फ चार सीट है। एक एक सीट झारखंड और आंध्र प्रदेश की प्रादेशिक पार्टियों के पास हैं। इस बार चुनाव के बाद भी राज्यसभा की तस्वीर कोई खास नहीं बदलने वाली है। सिर्फ इतना अंतर आएगा कि भाजपा के कोटे की 18 सीटों में से उसकी एक सीट कम हो जाएगी, जबकि कांग्रेस की सीटें चार से बढ़ कर पांच हो जाएंगी। झारखंड में एक सीट झारखंड मुक्ति मोर्चा को फिर से मिल जाएगी। अगर कांग्रेस मेहनत करे और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन उसका साथ दें तो हो सकता है कि झारखंड में कांग्रेस को एक सीट मिल जाए। हालांकि अभी इसकी उम्मीद कम दिख रही है। उधर आंध्र प्रदेश में जगन मोहन रेड्डी की पार्टी अपनी एक सीट गंवा देगी। कांग्रेस को एक सीट का फायदा कर्नाटक की वजह से हो रहा है। वहां कांग्रेस के चार में से तीन सीटें मिल जाएंगी। अभी उसके पास सिर्फ एक सीट है। उसे एक सीट का नुकसान राजस्थान में होगा, जिसकी भरपाई कर्नाटक में हो जाएगी। राजस्थान में उसके पास दो सीटें हैं, जिनमें से एक सीट वह गंवा देगी। मध्य प्रदेश में कांग्रेस अपनी एक सीट बचा लेगी। इस तरह चुनाव के बाद राज्यसभा में भाजपा की सीटें 113 से कम होकर 112 हो जाएंगी। ध्यान रहे भाजपा की सीटों में बड़ा इजाफा इस वजह से हुआ है कि आम आदमी पार्टी के सात राज्यसभा सांसद उसके साथ जुड़ गए हैं। पंजाब के छह राज्यसभा सांसदों का कार्यकाल जब समाप्त होगा तब भाजपा उनको फिर से पंजाब से ही राज्यसभा लाने में सक्षम नहीं होगी। बहरहाल, कांग्रेस की सीटें 29 से बढ़ कर 30 हो जाएंगी। इसके बाद भाजपा को एक या दो सीट का नुकसान साल के अंत में हो सकता है। पिछले विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को 111 सीटें आईं। इसके दम पर वह उत्तर प्रदेश दो सीटें जीत सकती है। इस तरह उसकी एक सीट बढ़ जाएगी।

झारखंड की दूसरी सीट दिलचस्प होगी!

झारखंड में राज्यसभा की दो सीटों पर चुनाव होना है। इसमें एक सीट झारखंड मुक्ति मोर्चा यानी जेएमएम के संस्थापक शिबू सोरेन की है। गौरतलब है कि पिछले साल जुलाई में शिबू सोरेन का निधन हो गया था। उसके बाद से ही यह सीट खाली है। दूसरी सीट भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहे दीपक प्रकाश की है। झारखंड विधानसभा 81 सदस्यों की है। इस नाते एक सीट जीतने के लिए 28 वोट की जरुरत है। अभी जेएमएम के नेतृत्व वाली सरकार के पास 56 विधायकों का समर्थन है। इस लिहाज से अगर गठबंधन मिल कर चुनाव लड़े तो दोनों सीटें आराम से निकल जाएंगी। लेकिन जेएमएम और कांग्रेस के अंदर एक राय नहीं

बन रही है। दूसरी ओर भाजपा कई राज्यों में ऐसे प्रयोग कर चुकी है कि जहां उसके पास अपनी संख्या पूरी नहीं होती है वह निर्दलीय उम्मीदवार उतार कर उसके जिताने का प्रयास करती है। अगर भाजपा ऐसा करती है तो मुकाबला बहुत दिलचस्प हो जाएगा। अभी बताया जा रहा है कि शिबू सोरेन वाली सीट पर उनके परिवार के किसी सदस्य को भेजा जाएगा। उनकी बेटी अंजली सोरेन के साथ साथ हेमंत सोरेन की विधायक पत्नी कल्पना सोरेन और बसंत सोरेन की पत्नी लता सोरेन के नाम की चर्चा है। थोड़े समय पहले यह भी कहा जा रहा था कि जेएमएम छोड़ कर गईं सीता सोरेन की वापसी हो सकती है और उनको राज्यसभा भेजा जा सकता है। दूसरी सीट पर हेमंत सोरेन अपनी पार्टी के किसी नेता को भेजना चाहते हैं, जबकि कांग्रेस इस सीट की मांग कर रही है। कांग्रेस का कहना है कि पिछले तीन चुनाव में जेएमएम ने उसे एक भी राज्यसभा सीट नहीं दी है। कांग्रेस के पास 16 विधायक हैं। उसे चुनाव जीतने के लिए जेएमएम के बचे हुए छह वोट के साथ राजद के चार और लेफ्ट के दो वोट चाहिए। वह अकेले चुनाव नहीं जीत सकती है और न अकेले जेएमएम चुनाव जीत सकती है।

इस विवाद का लाभ उठा कर भाजपा यह सीट हासिल करने की कोशिश करेगी। बताया जा रहा है कि झारखंड से दो बार सांसद रहे कारोबारी परिमल नाथवानी फिर से कोशिश कर रहे हैं। वे अभी आंध्र प्रदेश से राज्यसभा सांसद हैं। उन्होंने जेएमएम से बात की है। अगर भाजपा उनको समर्थन दे तो वे जेएमएम के वोट से जीत जाएंगे। भाजपा के पास अपने 21 विधायक हैं। इसके अलावा आजसू, लोजपा और जदयू के तीन विधायक हैं और निर्दलीय जयराम महतो हैं। इस तरह भाजपा एकमुश्त 24 या 25 वोट का इंतजाम करने में सक्षम है। वह जिसको समर्थन देगी उसे तीन या चार वोट का इंतजाम करना होगा। दूसरी ओर जेएमएम व कांग्रेस का जो दूसरा उम्मीदवार होगा उसे बहुत मैनेजमेंट करना होगा। अगर हेमंत सोरेन को दूसरी सीट नहीं मिलती है तो वे प्रबंधन नहीं करेंगे। कांग्रेस की ओर से शराब के कारोबारी धीरज साहू जोर लगा रहे हैं। वे पहले राज्यसभा सांसद रहे हैं।

भारत दुनिया का नया बॉस, मोदी के स्वागत को ऑस्ट्रेलिया तैयार, संसद में अल्बनीज ने किया बड़ा ऐलान

एजेंसी कैनबरा

भारत और ऑस्ट्रेलिया की दोस्ती उसी मुकाम पर खड़ी है। कैनबरा की संसद में जब ऑस्ट्रेलियाई पीएम एंथनी अल्बनीज ने भाषण देना शुरू किया तो वह केवल दो देशों की बात नहीं कर रहे थे बल्कि वह एक नई विश्व व्यवस्था का खांका खींच रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत वो शक्ति है जो इस दशक में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगी। यह शब्द सिर्फ कूटनीति नहीं है। यह उस ड्रैगन की हार की कहानी है जिसने कभी प्रशांत महासागर को अपनी जागीर समझा था। यह उस भारत की हुंकार है जो अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दहलीज पर खड़ा है। कैनबरा की संसद में एंथनी अल्बनीज का संबोधन दरअसल भारत के लिए एक प्रशस्ति प्रमाण पत्र था।

उन्होंने कहा कि भारत अब दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। लेकिन यह जनसंख्या बोझ नहीं बल्कि वो इंजन है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को नई रफ्तार दे रहा है। अलवरीज ने साफ कर दिया कि भारत और ऑस्ट्रेलिया की दोस्ती अब सिर्फ क्रिकेट और करी तक सीमित नहीं है बल्कि यह सुरक्षा और समृद्धि का एक अटूट संगम बन चुका है। जब कोई देश दूसरे देश की प्रगति को अपने लिए अवसर बताता है तो समझ जाइए कि रणनीतिक भरोसा अपने चरम पर है। ऑस्ट्रेलिया अब मान चुका है कि हिंद प्रशांत क्षेत्र में बिना भारत के कोई भी पत्ता नहीं हिल सकता है। प्राइम मिनिस्टर इज द बॉस। इस कहानी का सबसे भावुक और दिलचस्प पहलू है एंथनी एल्बनीज का भारत से व्यक्तिगत रिश्ता संबंध। 1991 में जब भारत आर्थिक संकट से जूझ रहा था तब एक विदेशी युवक कंधे पर बैक टांगे भारत की गलियों में घूम रहा था। वो युवक आज ऑस्ट्रेलिया का प्रधानमंत्री है। उन्होंने ट्रेन के डिब्बे में बैठकर उस भारत को देखा था जिसे दुनिया गरीबों का देश कहती थी। आज जब वे मोदी का स्वागत करने की तैयारी कर रहे हैं तो वह एक डिजिटल सुपर पावर और ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब को देख रहे हैं। यही वजह है दोस्तों कि अल्बनीज और मोदी की केमिस्ट्री किसी भी अन्य वैश्विक नेता से कहीं अधिक और असली दिखाई देती है। बता दें बीजिंग की दीवारों के पीछे आज सन्नाटा है। क्यों? क्योंकि भारत और ऑस्ट्रेलिया ने मिलकर चीन के विस्तारवाद के ताबूत में आखिरी कील ठोकने की तैयारी कर ली है। हाल ही में दिल्ली में हुई क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक ने एक ऐसा ब्लूप्रिंट तैयार कर लिया जिसने ड्रैगन की नींद उड़ा कर रखी है। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो, भारत के एस जयशंकर और ऑस्ट्रेलिया की पेनी वोंग इन तीनों ने मिलकर मैरिटाइम सर्विलांस और फ्यूल सिक्योरिटी का जो जाल बुना है उसमें अब चीन का बचना नामुमकिन सा है। अब समंदर की लहरों पर किसी एक की दादागिरी नहीं चलने वाली है। बल्कि अंतरराष्ट्रीय कानूनों का वहां पर अब राज होगा। देखिए दोस्तों, दोस्ती अपनी जगह है लेकिन व्यापार ही रिश्तों की असली बुनियाद है। भारत को साल 2030 तक अपनी सड़कों पर करोड़ों इलेक्ट्रिक गाड़ियां उतारनी है और इसके लिए चाहिए भारत को लिथियम यानी कि सफेद सोना। दुनिया का सबसे बड़ा लिथियम भंडार किसके पास है? जवाब है ऑस्ट्रेलिया।ऑस्ट्रेलिया के पास है। साल 2022 का आर्थिक समझौता यानी कि ईसीटीए अब एक ऐसी ऊंचाई पर पहुंच चुका है जहां ऑस्ट्रेलिया का कच्चा माल और भारत की तकनीक मिलकर दुनिया की नई सप्लाई चेन बनने जा रही हैं। और यह चीन की आर्थिक बादशाहत पर भारत और ऑस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा हमला है। देखिए ऑस्ट्रेलिया की आत्मा अब भारतीय रंग में रंग चुकी है। करीब 10 लाख भारतीय मूल के लोग आज वहां की अर्थव्यवस्था के स्तंभ हैं। कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं। सिडनी के हैरिस पार्क का नाम बदलकर लिटिल इंडिया करना महज एक प्रतीकात्मक कदम नहीं है दोस्तों बल्कि यह उस ताकत की पहचान थी जो भारत को ऑस्ट्रेलिया की घरेलू राजनीति में एक निर्णायक भूमिका देती है। अल्बनीज ने संसद में खड़े होकर वादा किया कि वे किसी भी भारत विरोधी या विभाजनकारी तत्व जैसे कि ख़स्तानी अलगाववाद को ऑस्ट्रेलिया की धरती पर ऑस्ट्रेलिया की जमीन पर पनपने नहीं देंगे। यह पीएम मोदी की सॉफ्ट पावर की महाजीत है।

लद्दाख में चीन बॉर्डर के पास भारत ने खोदा 1 किलोमीटर गहरा गड्ढा

एजेंसी नई दिल्ली

1950 के आसपास चीन ने लद्दाख के अक्सई चिन्ह इलाके में एक सड़क बनाने से शुरुआत की थी और धीरे-धीरे भारत के करीब 42,000 किमी हिस्से पर कब्जा कर लिया। उस समय के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि वो तो बंजर इलाका है। वहां घास का एक तिनका तक नहीं उगता। लेकिन अब भारत ने इसी लद्दाख में दो होश उड़ा देने वाले चमत्कार कर दिखाए हैं। जवाहरलाल नेहरू ने लद्दाख की जिस जमीन को बंजर कहा था, अब उसी जमीन के 800 किमी इलाके में घास उगाई जा रही है। इसी के साथ लद्दाख के जिस इलाके में तापमान -25 तक पहुंच जाता है, उसी इलाके की जमीन में 1000 मीटर यानी करीब 1 किमी गहरा गड्ढा खोदा गया है।

इस गड्ढे से जो निकला है उसे देखकर होश उड़ जाएंगे। भारत की सरकारी कंपनी ओएनजीसी ने लद्दाख की पुगा घाटी में 1000 मीटर की गहराई पर एक जियोथर्मल कुआं यानी भूतापीय कुआं सफलतापूक ड्रिल कर लिया है। 4400 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले इस बर्फीले इलाके में भारत ने खुदाई करके जमीन के गर्भ से उबलता हुआ पानी और भाप निकाल ली है। अब जमीन की गहराई में पैदा होने वाली इस भाप से जिओथर्मल पावर प्लांट बनाने की तैयारी शुरू हो चुकी है। यह एक बहुत बड़ी सफलता है। वह भी चीनी बॉर्डर के पास। हम आपको बता दें कि यह भारत का सबसे गहरा जियोथर्मल कुआं है और इसी के साथ भारत का पहला जियोथर्मल पावर प्लांट बनने जा रहा है। जियोथर्मल प्लांट बिजली बनाने के लिए धरती की गहराई में पैदा होने वाली कुदरती गर्मी का इस्तेमाल करता है। इसमें जमीन के नीचे से निकलने वाली सीधी भाप का उपयोग टरबाइन चलाने के लिए किया जाता है। जिससे लगातार बिजली बनती रहती है। आपको बता दें कि पृथ्वी की गहराई में मौजूद गर्म चट्टाने और मैग्मा पानी को उबालकर भाप में बदलते रहते हैं और अब इसी भाप को प्रेशर के साथ लद्दाख की जमीन के गर्भ से निकालकर बिजली पैदा करने की तैयारी शुरू हो चुकी है। वैज्ञानिक इन गर्म जल भंडारों तक पहुंचने के लिए जमीन में गहरे कुएं खोदते हैं। ऐसा ही कुआं सफलता पूर्वक लद्दाख में खोद लिया गया।

पीएम मोदी के बधाई संदेश पर क्या बोले बांग्लादेशी पीएम तारिक रहमान, सीमा पर चल रहा तनाव

एजेंसी ढाका

बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ईद-उल-अजहा के मौके पर भेजे गए बधाई संदेश पर प्रतिक्रिया दी है। तारिक रहमान ने इसके लिए पीएम मोदी का आभार जताया और दोनों देशों के संबंधों में मजबूती की आशा व्यक्त की।

तारिक रहमान का यह जवाब इसलिए भी अहम माना जा रहा है, क्योंकि भारत-बांग्लादेश सीमा पर इन दिनों तनाव चरम पर है। दोनों देशों से सीमा सुरक्षा बल हाई अलर्ट पर हैं और चौकसी को बढ़ाया है। हाल के दिनों में भारत-बांग्लादेश सीमा पर झड़पें भी देखी गई हैं। बांग्लादेश के प्रधानमंत्री कार्यालय ने अपने एक्स हैंडल पर तारिक रहमान के हवाले से लिखा, “ईद-उल-अजहा के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मुझे और बांग्लादेश की जनता को दी गई हार्दिक शुभकामनाओं के लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। आशा है कि बांग्लादेश और भारत के लोगों के बीच आपसी सम्मान, मित्रता और सद्भावना के आधार पर संबंध और भी मजबूत होते रहेंगे।” प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पवित्र ईद-उल-अजहा के अवसर पर प्रधानमंत्री तारिक रहमान और बांग्लादेश के लोगों को हार्दिक बधाई दी थी। तारिक रहमान को भेजे गए एक संदेश में, पीएम मोदी ने दोनों पड़ोसी देशों के बीच जन-केंद्रित सहयोग को मज़बूत करने के प्रति नई दिल्ली की प्रतिबद्धता को दोहराया। ढाका स्थित भारतीय उच्चायोग के अनुसार, इस संदेश में पीएण मोदी ने भारत की जनता और सरकार की ओर से बांग्लादेश के “भाईचारे वाले लोगों” को बधाई दी।

पीएम मोदी ने कहा कि यह त्योहार भारत की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है, और इसे पूरे देश में लाखों मुसलमानों द्वारा हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। ईद-उल-अजहा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यह त्योहार त्याग, करुणा और भाईचारे के शाश्वत आदर्शों का प्रतीक है, जो एक शांतिपूर्ण और समावेशी दुनिया को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हैं। द्विपक्षीय संबंधों का ज़िक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि भारत और बांग्लादेश के बीच एक गहरा रिश्ता है, जो साझा बलिदानों, सांस्कृतिक समानताओं और शांति, स्थिरता तथा विकास की आपसी आकांक्षा पर आधारित है।

T-90, T-72 के बाद अब फ्यूचर टैंक, रूस का भारत को बड़ा ऑफर, क्या तैयार होगी मोदी

एजेंसी मॉस्को

रूस ने भारत को साथ मिलकर नेक्स्ट जेनरेशन का टैंक बनाने का प्रस्ताव दिया है। यह प्रस्ताव दुनिया के सबसे बड़ी टैंक निर्माता कंपनी उरालवागोनजावोड के सीईओ अलेक्जेंडर पोटापोव ने पेश किया है। यह वही कंपनी है, जिसने प्रसिद्ध T-72, T-90 और T-14 आर्मटा (T-14 Armata) जैसे आधुनिक टैंकों का निर्माण किया है। भारतीय सेना इनमें से दो T-72 टैंक और T-90 टैंक का इस्तेमाल करती है, जिनका देश में ही लाइसेंस के तहत प्रोडक्शन होता है। ऐसे में अब मोदी सरकार को रूस के इस ऑफर पर अंतिम निर्णय लेना है। हालांकि, भारतीय सेना भी लंबे समय से भविष्य के युद्धों को देखते हुए एक सुपर टैंक के निर्माण की कोशिश में है। उरालवागोनजावोड के सीईओ अलेक्जेंडर पोटापोवके अनुसार, मॉस्को भारत के साथ मिलकर “भविष्य का टैंक” विकसित करने के लिए तैयार है। उन्होंने RIA Novosti से कहा, “जिंदगी रुकती नहीं है... हम नए प्लेटफ़ॉर्म के बारे में बात कर रहे हैं।” उन्होंने यह भी जोड़ा कि मॉस्को समझता है कि भारत का रक्षा मंत्रालय भी अगली पीढ़ी के कवच (आर्मर) की ओर देख रहा है। उन्होंने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, “हम इस क्षेत्र में सहयोग करने के लिए तैयार हैं। मुझे लगता है कि हम एक ऐसा साझा समाधान ढूंढ़ लेंगे जिसे लागू किया जा सके।”

रूस से शुरू से ही टैंकों के निर्माण में दुनिया में अग्रणी रहा है। रूसी टैंक अपनी मजबूती, मारक क्षमता और युद्ध के मैदान में बेहतरीन गतिशीलता के लिए पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। सोवियत संघ के समय से ही रूस ने बख्तरबंद वाहनों के निर्माण पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया है। यही कारण है कि भारत शुरू से ही रूसी टैंकों का प्रमुख ग्राहक रहा है। भारतीय सेना अब भी रूसी टैंक पर ही निर्भर है। रूस के बनाए प्रमुख मुख्य युद्धक टैंकों में टी-14 आर्माटा प्रमुख है। यह रूस का सबसे आधुनिक और अगली पीढ़ी का टैंक है। इसमें पूरी तरह से मानवरहित बुर्ज होता है, जिससे इसके क्रू मेंबर सुरक्षित रहते हैं। इसके अलावा टी-90एम प्रोरीव (टी-90 भीष्म) वर्तमान में रूसी सेना का सबसे घातक और सक्रिय टैंक है। रूस का टी-80बीवीएम टैंक अपने गैस टरबाइन इंजन के लिए प्रसिद्ध है, जिसके कारण यह अत्यधिक ठंडे इलाकों में भी तेजी से काम कर सकता है। टी-72बी3एम टैंक दुनिया में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले T-72 टैंक का सबसे आधुनिक वेरिएंट है। भारत में इसे अजेय के नाम से जाना जाता है।

अमेरिका-ईरान के बीच ऐतिहासिक शांति समझौता तैयार, बस ट्रंप की `हां´ का इंतजार, खुलेगा होर्मुज

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका और ईरान के बीच एक मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (MOU) पर सहमति बन गई है। यह दावा अमेरिकी मीडिया Axios ने अपनी रिपोर्ट में किया है। उसने कहा है कि यह सहमति अमेरिका और ईरान के बीच बातचीत करने वालों ने बनाई है। इसका मकसद सीजफायर को आगे बढ़ाना और ईरान के न्यूक्लियर प्रोग्राम पर बातचीत शुरू करना है। लेकिन, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अभी तक इसे अपनी आखिरी मंजूरी नहीं दी है। यह बात अमेरिका के दो अधिकारियों और मध्यस्थता की कोशिशों में शामिल एक क्षेत्रीय सूत्र ने बताई है। रिपोर्ट में लिखा है कि इस MoU पर दस्तखत होना, जंग शुरू होने के बाद से अब तक की सबसे बड़ी कूटनीतिक कामयाबी होगी। लेकिन, एक ऐसा आखिरी समझौता, जो ट्रंप की न्यूक्लियर से जुड़ी मांगों को पूरा करे, उसके लिए अभी और भी गहन बातचीत की जरूरत होगी। अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि मंगलवार तक इस समझौते की ज्यादातर शर्तें तय हो चुकी थीं, लेकिन दोनों पक्षों को अभी भी अपने बड़े नेताओं से मंजूरी लेनी बाकी थी। अमेरिकी अधिकारियों ने दावा किया कि बाद में ईरानी पक्ष वापस आया और कहा कि उन्हें जरूरी मंजूरी मिल गई है और वे दस्तखत करने के लिए तैयार हैं। ईरान ने इस बात की पुष्टि नहीं की है। अमेरिकी बातचीत करने वालों ने ट्रंप को आखिरी समझौते की पूरी जानकारी दी, लेकिन उन्होंने तुरंत इस पर दस्तखत नहीं किए। एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया, “राष्ट्रपति ने मध्यस्थों को बताया कि वह इस बारे में सोचने के लिए कुछ दिन का समय चाहते हैं।” ट्रंप और उनके सलाहकारों को जंग के शुरुआती दौर में कई बार ऐसा लगा था कि वे किसी समझौते के बहुत करीब हैं, लेकिन कोई भी समझौता हो नहीं पाया। अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि 60 दिन के इस MoU में यह बात शामिल होगी कि होर्मुज जलडमरूमध्य से होने वाली जहाजों की आवाजाही “बिना किसी रोक-टोक के” होगी। एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि इसका मतलब है कि कोई टोल टैक्स नहीं लगेगा और न ही किसी तरह की कोई परेशानी होगी। साथ ही, ईरान को 30 दिनों के अंदर इस जलडमरूमध्य से सभी बारूदी सुरंगें हटानी होंगी। एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि अमेरिका की नौसेना द्वारा लगाई गई नाकाबंदी भी हटा ली जाएगी, लेकिन ऐसा तभी होगा जब कमर्शियल जहाजों की आवाजाही फिर से शुरू हो जाएगी।

पिनाका, एएलएस-50, आकाश, ATAGS... आर्मेनिया में भारतीय हथियारों की नुमाइश, अजरबैजान-तुर्की परेशान

एजेंसी येरेवेन

अर्मेनियाई सेना ने गुरुवार को गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित परेड के दौरान अपनी सैन्य शक्ति और हथियारों का प्रदर्शन किया। इनमें वे हथियार भी शामिल थे, जिन्हें आर्मेनिया ने हाल के कुछ वर्षों में भारत से खरीदे हैं। इनमें पिनाका मल्टी बैरल रॉकेट लॉन्चर, आकाश एयर डिफेंस सिस्टम, स्वाति रडार सिस्टम,एएलएस-50 आत्मघाती ड्रोन, एटीएजीएस तोप जैसे हथियार शामिल हैं। आर्मेनिया ने इन हथियारों का प्रदर्शन तब किया है, जब अजरबैजान के साथ तनाव चरम पर है। अजरबैजान को तुर्की और पाकिस्तान का सैन्य समर्थन मिला हुआ है। ऐसे में भारतीय हथियारों को तुर्की और पाकिस्तान के लिए भी जवाब माना जा रहा है। आकाश एयर डिफेंस सिस्टम आकाश एयर डिफेंस सिस्टम को भारत के डीआरडीओ ने विकसित किया है। इस सिस्टम का निर्माण भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) करती है। आकाश एक मध्यम दूरी का सतह से हवा में मार करने वाला एयर डिफेंस सिस्टम है, जिसे विमानों, ड्रोन और क्रूज मिसाइलों को रोकने के लिए डिजाइन किया गया है। आकाश एयर डिफेंस सिस्टम से आर्मेनिया की हवाई सुरक्षा मजबूत होगी, जो हाल के क्षेत्रीय संघर्षों के दौरान काफी कमजोर देखी गई थी। आर्मेनिया ने भारत से 155 मिमी ATAGS (एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम) की खरीद की है। इसे डीआरडीओ और कल्याणी समूह ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। यह भारत की सबसे महत्वकांक्षी स्वदेशी तोप परियोजना में से एक है। इसकी मारक क्षमता बेस-ब्लीड गोला-बारूद के उपयोग से 48 किमी से अधिक और रैमजेट प्रोजेक्टाइल्स के साथ 80 किमी तक है। यह बर्स्ट मोड में 85 सेकंड के भीतर 6 गोले दागने में सक्षम है। पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर आर्मेनिया ने भारत से पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर की भी खरीद की है। इसे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने स्वदेशी रूप से डिजाइन और विकसित किया है। पिनाका रॉकेट सिस्टम केवल 44 सेकंड में 12 रॉकेट दागकर दुश्मन के ठिकानों को पूरी तरह से नष्ट करने में सक्षम है। पिनाका मार्क-1 की मारक क्षमता लगभग 40 किलोमीटर है। वहीं, इसके उन्नत संस्करणों की रेंज 75 किलोमीटर से अधिक है। स्वाति वेपन लोकेटिंग रडार स्वाति वेपन लोकेटिंग रडार को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और BEL ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। इसका मुख्य कार्य युद्धक्षेत्र में दुश्मन के तोपखाने, मोर्टार और रॉकेट लॉन्चरों का पता लगाना और सेना को जवाबी कार्रवाई के लिए सटीक लोकेशन उपलब्ध कराना है। आर्मेनिया ने इसे अपने पहाड़ी इलाकों में अजरबैजान के फायरिंग पोजिशन का पता लगाने के लिए खरीदा है। एएलएस-50 लोइटरिंग मुनिशन्स को टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड ने स्वदेशी रूप से विकसित किया है। यह बिना किसी रनवे के सीधे हेलीकॉप्टर की तरह उड़ान भर सकता है और उतर सकता है, जिससे इसे किसी भी कठिन भूभाग या ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों से आसानी से संचालित किया जा सकता है। इसकी मारक क्षमता 50 किलोमीटर से अधिक है। इसे “आत्मघाती ड्रोन” कहा जाता है। यह युद्धक्षेत्र के ऊपर मंडराते हुए सटीक निशाने पर हमला करते हैं। अजरबैजान-तुर्की-पाकिस्तान को सीधा संदेश भारत-आर्मेनिया रक्षा संबंधों के पीछे सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक पहलुओं में से एक, तुर्की-अजरबैजान-पाकिस्तान का उभरता हुआ गठबंधन है। नागोर्नो-काराबाख संघर्ष के दौरान तुर्की ने अजरबैजान को खुलकर सैन्य सहायता दी थी। पाकिस्तान ने कूटनीतिक तौर पर खुलेआम अजरबैजान का समर्थन किया।

वैभव सूर्यवंशी को टीम इंडिया में लाने के लिए अभी राजी नहीं दिग्गज, कहा- क्यों कर रहे हो इतनी जल्दबाजी

एजेंसी नई दिल्ली

आईपीएल 2026 में राजस्थान रॉयल्स के 15 वर्षीय युवा ओपनर वैभव सूर्यवंशी ने अपनी आतिशी बल्लेबाजी से कोहराम मचा रखा है। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ एलिमिनेटर मुकाबले में वैभव ने महज 29 गेंदों पर 5 चौकों और 12 छक्कों की मदद से 97 रनों की अविश्वसनीय पारी खेली। उनकी इस तूफानी बल्लेबाजी के दम पर राजस्थान ने 243 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया जिसके जवाब में हैदराबाद की टीम 196 रनों पर ढेर हो गई। वैभव के इस गजब के फॉर्म को देखने के बाद उन्हें भारतीय नेशनल टीम में शामिल करने की मांग उठने लगी है जिस पर पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति को एक सलाह दी है। वैभव को टीम इंडिया में शामिल करने की जल्दबाजी पर बात करते हुए आकाश चोपड़ा ने कहा, 'अगले टी20 वर्ल्ड कप में अभी दो साल का वक्त है यानी हमारे पास पर्याप्त समय है। यह सच है कि आईपीएल के फॉर्म के आधार पर वैभव सूर्यवंशी को भारतीय टीम में चुनने का विचार बेहद रोमांचक है। आप इसे नजरअंदाज नहीं कर सकते क्योंकि आईपीएल भारत का सबसे बड़ा और टॉप टी20 टूर्नामेंट है। वह हर तरफ रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं और आपको उन्हें गंभीरता से लेना होगा। इसमें कोई शक नहीं है कि यह बच्चा बेहद स्पेशल है।' हालांकि, आकाश चोपड़ा का मानना है कि वैभव के लिए टीम इंडिया के प्लेइंग इलेवन में जगह बनाना फिलहाल इतना आसान नहीं होगा क्योंकि मौजूदा ओपनर्स शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, 'आप सिर्फ बदलाव करने के लिए टीम में बदलाव नहीं करते। सीधा सा नियम है किसी खिलाड़ी को टीम से बाहर करने के लिए उसका फ्लॉप होना जरूरी है। अगर कोई खिलाड़ी पहले से ही टीम का टॉपर बना हुआ है तो आप उसे सिर्फ इसलिए रिप्लेस नहीं कर सकते क्योंकि बाहर किसी और ने बड़े रन बना दिए हैं। अभिषेक शर्मा और संजू सैमसन इस समय टीम के वो टॉपर्स हैं आप उन्हें नहीं हटा सकते। अगर आप ऐसा करते हैं तो दो-तीन साल बाद जब वैभव का खराब दौर आएगा तब उनके साथ भी यही होगा और किसी नए युवा बल्लेबाज को उनकी जगह अंदर धकेल दिया जाएगा।' सेलेक्टर्स पर बनने वाले दबाव को लेकर चोपड़ा ने सिलेक्टर्स को भारतीय क्रिकेट के हित में फैसला लेने की सलाह दी। उन्होंने कहा, 'ऐसे में सिलेक्टर्स—अजीत अगरकर, आरपी सिंह और प्रज्ञान ओझा पर निश्चित रूप से दबाव होगा। लेकिन उन्हें वही करना चाहिए जो भारतीय क्रिकेट के भविष्य के लिए सबसे बेहतर हो। मुझे भरोसा है कि वे सही फैसला लेंगे। वैभव का इंडिया डेब्यू कल ही होना जरूरी नहीं है इसके लिए इंतजार किया जा सकता है। वह अभी सिर्फ 15 साल के हैं इसलिए कोई हड़बड़ी नहीं होनी चाहिए।' वैभव सूर्यवंशी इस सीजन में 15 मैचों में 45.33 की औसत और 242.85 के अविश्वसनीय स्ट्राइक रेट से 680 रन बनाकर ऑरेंज कैप की रेस में सबसे आगे चल रहे हैं। इस सीजन उन्होंने 55 चौके और सबसे ज्यादा 65 छक्के लगाए हैं। उनके इस शानदार प्रदर्शन का इनाम उन्हें मिल चुका है और श्रीलंका में होने वाली वनडे ट्राई-सीरीज (जिसमें अफगानिस्तान भी शामिल है) के लिए उन्हें इंडिया ए टीम में चुन लिया गया है। तिलक वर्मा की कप्तानी वाली इस इंडिया-ए टीम में उपकप्तान रियान पराग के अलावा प्रभसिमरन सिंह और प्रियांश आर्य जैसे युवा खिलाड़ियों को भी मौका मिला है।

ग्रीन बे पैकर्स फैंस का टूट सकता है दिल, माइका पार्सन्स की वापसी पर गहराया सस्पेंस

एजेंसी नई दिल्ली

ग्रीन बे पैकर्स के लिए नए सत्र से पहले एक चिंताजनक खबर सामने आई है। टीम के स्टार डिफेंस खिलाड़ी माइका पार्सन्स की वापसी अब उम्मीद से ज्यादा देर से हो सकती है। मौजूद जानकारी के अनुसार एनएफएल के वरिष्ठ पत्रकार एडम शेफ्टर ने दावा किया है कि माइका पार्सन्स शुरुआती कुछ मुकाबलों से बाहर रह सकते हैं। बता दें कि माइका पार्सन्स पिछले वर्ष दिसंबर में डेनवर ब्रोंकोस के खिलाफ मुकाबले के दौरान एसीएल चोट का शिकार हो गए थे। इसके बाद से ही वह मैदान से बाहर चल रहे हैं। ग्रीन बे पैकर्स के प्रशंसकों को उम्मीद थी कि वह नए सत्र की शुरुआत तक पूरी तरह फिट होकर वापसी करेंगे, लेकिन अब उनकी रिकवरी को लेकर नई चिंता बढ़ गई है। गौरतलब है कि एनएफएल कार्यक्रम "द पैट मैकअफी शो" में एडम शेफ्टर ने कहा कि माइका पार्सन्स न केवल ऑफसीजन ट्रेनिंग और प्रशिक्षण शिविर से दूर रहेंगे, बल्कि सत्र के शुरुआती कुछ मैच भी मिस कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि टीम उन्हें शारीरिक रूप से खेलने योग्य खिलाड़ियों की सूची में रख सकती है। एडम शेफ्टर ने कहा कि माइका पार्सन्स की चोट काफी गंभीर थी और यह चोट पिछले सत्र के अंतिम चरण में लगी थी। ऐसे में टीम जल्दबाजी में उनकी वापसी नहीं चाहती है। उन्होंने बताया कि अभी नियमित सत्र शुरू होने में चार महीने से भी कम समय बचा है और खिलाड़ी पूरी तरह तैयार नजर नहीं आ रहे हैं। वहीं ग्रीन बे पैकर्स के मुख्य कोच मैट ला फ्लर ने भी पुष्टि की है कि माइका पार्सन्स अभी टीम के साथ अभ्यास में शामिल नहीं होंगे। हालांकि उन्होंने यह जरूर कहा कि खिलाड़ी की रिकवरी अच्छी चल रही है और वह जल्द टीम से जुड़ सकते हैं। बता दें कि पिछले सत्र में माइका पार्सन्स टीम के सबसे अहम खिलाड़ियों में शामिल थे। उन्होंने 14 मुकाबलों में 41 टैकल, 12.5 सैक और दो फोर्स फंबल किए थे। उनकी मौजूदगी में पैकर्स ने शानदार शुरुआत की थी और शुरुआती 14 में से 9 मुकाबले जीते थे। लेकिन उनके चोटिल होने के बाद टीम लगातार चार मुकाबले हार गई थी, जिसमें वाइल्ड कार्ड राउंड की हार भी शामिल रही थी। मौजूद जानकारी के अनुसार यदि माइका पार्सन्स शुरुआती मुकाबलों में उपलब्ध नहीं रहते हैं तो टीम को डिफेंस में बड़ा झटका लग सकता है। साथ ही पैकर्स को अपनी रणनीति में बदलाव करना पड़ सकता है। अब सभी की नजरें माइका पार्सन्स की फिटनेस रिपोर्ट पर टिकी हुई हैं। टीम प्रबंधन भी नहीं चाहता कि जल्द वापसी के कारण खिलाड़ी दोबारा चोटिल हों। ऐसे में उनकी वापसी को लेकर फैसला पूरी सावधानी के साथ लिया जाएगा।

नॉर्वे शतरंज 2026 में प्रज्ञानानंदा का दबदबा, विश्व नंबर-1 मैग्नस कार्लसन को फिर दी मात

एजेंसी नई दिल्ली

नॉर्वे शतरंज प्रतियोगिता 2026 में भारतीय ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंदा ने एक बार फिर दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन को हराकर बड़ी उपलब्धि हासिल की हैं। ओस्लो में खेले गए इस मुकाबले ने शतरंज जगत में एक बार फिर प्रज्ञानानंदा और कार्लसन की बढ़ती प्रतिद्वंद्विता को चर्चा के केंद्र में ला दिया हैं। बता दें कि प्रज्ञानानंदा ने इससे पहले साल 2024 में भी इसी प्रतियोगिता में मैग्नस कार्लसन को क्लासिकल मुकाबले में हराया था। उस जीत को उनके करियर का बड़ा मोड़ माना गया था और अब 2026 में मिली यह जीत उनके लगातार बेहतर होते प्रदर्शन का संकेत मानी जा रही है। मौजूद जानकारी के अनुसार मुकाबले की शुरुआत काफी संतुलित रही, लेकिन मध्य खेल में प्रज्ञानानंदा ने बेहद धैर्य और सटीक चालों से कार्लसन पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। हालांकि समय की कमी के दौरान कार्लसन ने वापसी की कोशिश की, लेकिन आखिर में उनसे एक बड़ी गलती हो गई जिसके बाद उन्हें हार स्वीकार करनी पड़ी है। गौरतलब है कि इस टूर्नामेंट में मैग्नस कार्लसन का प्रदर्शन अब तक उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा। समय प्रबंधन और दबाव में गलत चालें उनके लिए लगातार परेशानी बनती दिख रही हैं। वहीं दूसरी ओर प्रज्ञानानंदा का आत्मविश्वास लगातार बढ़ता नजर आ रहा हैं। इसी प्रतियोगिता में मौजूदा विश्व चैंपियन डी. गुकेश डोम्माराजू और अलीरेजा फिरोजा के बीच क्लासिकल मुकाबला ड्रॉ रहा। इसके बाद खेले गए आर्मागेडन टाईब्रेकर में अलीरेजा फिरोजा ने जीत दर्ज कर अतिरिक्त अंक अपने नाम किए। वहीं दूसरे मुकाबले में विंसेंट कीमर और वेस्ली सो के बीच क्लासिकल बाजी बराबरी पर खत्म हुई। बाद में आर्मागेडन मुकाबले में वेस्ली सो ने जीत हासिल कर अतिरिक्त अंक जुटाए हैं। तीन दौर के बाद अलीरेजा फिरोजा अंक तालिका में शीर्ष पर बने हुए हैं। महिला वर्ग में अन्ना मुजिचुक और भारतीय खिलाड़ी हम्पी कोनेरू के बीच मुकाबला ड्रॉ रहा। हालांकि आर्मागेडन टाईब्रेकर में अन्ना मुजिचुक ने बाजी मार ली। दूसरी ओर दिव्या देशमुख ने बिबिसारा अस्साउबायेवा के खिलाफ शानदार प्रदर्शन करते हुए आर्मागेडन मुकाबले में जीत दर्ज की। भारतीय शतरंज के लिए यह टूर्नामेंट काफी खास माना जा रहा हैं क्योंकि युवा खिलाड़ी लगातार दुनिया के दिग्गज खिलाड़ियों को कड़ी चुनौती देते नजर आ रहे हैं। खास तौर पर प्रज्ञानानंदा की यह जीत आने वाले बड़े अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के लिए भारतीय शतरंज को नई उम्मीद दे रही है।

ईशा सिंह ने पिस्टल से साधा निशाना, विश्व रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पर किया कब्जा

एजेंसी नई दिल्ली

म्यूनिख से भारतीय निशानेबाजी के लिए बड़ी और गर्व भरी खबर सामने आई है। युवा निशानेबाज ईशा सिंह ने आईएसएसएफ विश्व कप में महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में नया विश्व रिकॉर्ड बनाकर इतिहास रच दिया है। सिर्फ 21 साल की ईशा ने फाइनल में 43 अंकों के साथ स्वर्ण पदक जीतते हुए दक्षिण कोरिया की किम येजी का रिकॉर्ड तोड़ दिया, जिन्होंने वर्ष 2024 में बाकू विश्व कप में 42 अंक बनाए थे।

गौरतलब है कि इस मुकाबले में पेरिस ओलंपिक चैंपियन यांग जिन और पूर्व विश्व चैंपियन डोरीन वेनेकैंप जैसी दिग्गज खिलाड़ी भी मौजूद थीं। हालांकि ईशा ने शुरुआत से ही दबदबा बनाए रखा और पहले तीन सीरीज में एक भी अंक नहीं गंवाया। जर्मनी की डोरीन वेनेकैंप ने 38 अंकों के साथ रजत पदक जीता, जबकि यांग जिन पांचवें स्थान पर रहीं।

मौजूद जानकारी के अनुसार ईशा सिंह की इस सफलता के पीछे पिछले चार वर्षों की लगातार मेहनत और खास तकनीकी प्रशिक्षण रहा है। उनके कोच रोनक पंडित ने उन्हें अलग शैली में प्रशिक्षण दिया। आमतौर पर निशानेबाज तेजी से हाथ उठाकर निशाना लगाते हैं, लेकिन ईशा को धीरे हाथ उठाने और उसी मूवमेंट में ट्रिगर दबाने की ट्रेनिंग दी गई। यही तकनीक म्यूनिख में उनके लिए सबसे बड़ी ताकत साबित हुई है।

ईशा सिंह ने मुकाबले के बाद कहा कि 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा काफी चुनौतीपूर्ण होती है और इसमें शुरुआत से बढ़त बनाना बहुत जरूरी होता है। उन्होंने बताया कि वह फाइनल के दौरान बाकी खिलाड़ियों या उनके नामों पर ध्यान नहीं देतीं, बल्कि सिर्फ अपनी प्रक्रिया और मानसिक संतुलन पर फोकस करती है।

बता दें कि 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा, 10 मीटर एयर पिस्टल से काफी अलग मानी जाती है। इसमें निशानेबाजों को बेहद कम समय में लक्ष्य साधना होता है। फाइनल पूरी तरह तेज रफ्तार राउंड में होता है, जहां खिलाड़ी के पास सिर्फ तीन सेकंड का समय होता है। ऐसे दबाव वाले मुकाबले में लगातार सटीक निशाना लगाना आसान नहीं माना जाता है। ईशा ने क्वालिफिकेशन में 587 अंक हासिल कर चौथे स्थान पर जगह बनाई थी। फाइनल में उन्होंने शुरुआती तीन सीरीज में शानदार प्रदर्शन किया। चौथी सीरीज में पहला निशाना चूकने के बावजूद उन्होंने वापसी की और आखिरी चरण में शानदार खेल दिखाते हुए विश्व रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

गौरतलब है कि यह पहली बार नहीं है जब ईशा सिंह ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ा प्रदर्शन किया हो। पिछले वर्ष उन्होंने अर्जेंटीना विश्व कप में रजत पदक जीता था। इसके अलावा काहिरा विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक और इस वर्ष एशियाई खिताब भी अपने नाम कर चुकी हैं। अब इस साल दोहा में होने वाली विश्व चैंपियनशिप पर सभी की नजरें रहेंगी, जहां लॉस एंजिलिस ओलंपिक के लिए शुरुआती कोटा स्थान तय किए जाएंगे। माना जा रहा है कि ईशा सिंह भारतीय निशानेबाजी की नई बड़ी उम्मीद बनकर उभर रही हैं।

व्यापार

पेट्रोल-डीजल महंगा होने पर क्या सच में तेल कंपनियां कूट रही हैं अंधा पैसा 77821 करोड़ की पूरी सच्चाई, जानें

एजेंसी नई दिल्ली

पिछले कुछ दिनों में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में करीब 7.5 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी हुई है, जिसने आम आदमी की जेब पर सीधा असर डाला है। इस बढ़ोतरी ने एक बार फिर पुरानी बहस को हवा दे दी है। क्या मिडिल ईस्ट (पश्चिम एशिया) संकट के बीच भारत की ऑयल मार्केटिंग कंपनियां (OMCs) विंडफॉल गेन यानी जबरदस्त मुनाफा कमा रही हैं? इस पूरी बहस के केंद्र में एक बड़ा आंकड़ा है। वित्त वर्ष 2025-26 में तेल कंपनियों को 77,821 करोड़ रुपये का संयुक्त मुनाफा हुआ। यह सुनने में बहुत बड़ा लगता है, लेकिन इसकी हकीकत काफी जटिल है। जब आप इसमें मार्जिन, कुल टर्नओवर, पिछले नुकसान और वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव को जोड़कर देखते हैं, तो तस्वीर कुछ और ही नजर आती है। केंद्र सरकार ने पहले ही पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क (Excise Duty) में 10 रुपये प्रति लीटर की कटौती की थी। हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने साफ किया कि उत्पाद शुल्क में इस कटौती की वजह से सरकार को राजस्व में करीब 1 लाख करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ेगा। हालांकि, राहत की बात यह है कि संकट शुरू होने के बाद से भारत में ईंधन की खुदरा कीमतों में केवल 8 से 9% की बढ़ोतरी हुई है, जो कि हमारे पड़ोसी देशों (जहां 20% से 67% तक की बढ़ोतरी देखी गई) की तुलना में काफी कम है। केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने पहले कहा था कि तेल कंपनियों को हर दिन करीब 1000 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा था। भले ही OMCs ने FY26 के लिए 77,821 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया है, लेकिन मिडिल ईस्ट संकट का असली असर अभी पूरी तरह से मौजूदा कमाई में दिखाई नहीं दे रहा है। इसके मुख्य रूप से दो कारण हैं: भारतीय तेल कंपनियां 50-60 दिनों के कच्चे तेल के स्टॉक (Inventory) पर काम कर रही थीं, जिसे संकट से पहले की सस्ती कीमतों पर खरीदा गया था। इसलिए FY26 का मुनाफा पुराने और सस्ते कच्चे तेल की वजह से है। मार्च के आखिर से जो नया और महंगा कच्चा तेल सिस्टम में आया है, उसका असली दबाव वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही (Q1 FY27) के नतीजों में दिखेगा, जो अगस्त 2026 में जारी होंगे। अगर कच्चे तेल की कीमतें $100 प्रति बैरल से ऊपर बनी रहती हैं, तो आने वाली तिमाहियों में तेल कंपनियों पर दबाव बहुत ज्यादा बढ़ सकता है। कागजों पर 77,821 करोड़ रुपये का मुनाफा बहुत बड़ा लग सकता है, लेकिन यह करीब 20 लाख करोड़ रुपये के विशाल टर्नओवर पर महज 3% से 4% का मार्जिन है। रिफाइनिंग और फ्यूल रिटेलिंग जैसे कमोडिटी बिजनेस में इसे बिल्कुल सामान्य माना जाता है। इसे इंडियन ऑयल (IOC) के उदाहरण से समझते हैं। इंडियन ऑयल का टर्नओवर करीब 10 लाख करोड़ रुपये है और मुनाफा 20 से 30 हजार करोड़ रुपये के आसपास रहता है, जो केवल 3% का मार्जिन दिखाता है।अगर 20 लाख करोड़ रुपये के टर्नओवर पर कंपनियां सिर्फ 2000 करोड़ रुपये कमाएंगी, तो मार्जिन गिरकर 0.1% रह जाएगा। इतने कम मार्जिन पर कंपनियां न तो सुचारू रूप से चल पाएंगी और न ही भविष्य के रिफाइनरी विस्तार या रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट्स के लिए पूंजी जुटा पाएंगी। कहां जाता है तेल कंपनियों का मुनाफा? सालाना मुनाफे का लगभग आधा हिस्सा कॉर्पोरेट टैक्स और डिविडेंड के रूप में सरकार के पास जाता है। इस पैसे का इस्तेमाल सड़कों, हाईवे, रेलवे, मेट्रो और बुनियादी ढांचे के निर्माण में होता है। इसके बाद बचा हुआ पैसा रिफाइनरी के विस्तार, पाइपलाइन बिछाने और स्वच्छ ऊर्जा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने में लगाया जाता है। जनता को सब्सिडी का बोझ भी कंपनियां उठाती हैं।

होर्मुज खुलने से भारत को मिलेगी तेल राहत की ऑक्सीजन, लेकिन कैसे भरेगा खाली हुआ आर्थिक टैंक

एजेंसी नई दिल्ली

ईरान और अमेरिका के बीच शांति समझौते की उम्मीद दिखाई दे रही है। अगर यह समझौता होता है तो स्ट्रेट ऑफ होर्मुज (Strait of Hormuz) फिर से सामान्य रूप से खुल सकता है। इससे भारत समेत दुनिया के कई देशों को बड़ी राहत मिल सकती है। भारत, जो अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए इस समुद्री मार्ग पर काफी हद तक निर्भर है, उसे कच्चे तेल, एलपीजी और उर्वरकों की सप्लाई में राहत मिलेगी। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि यह राहत सिर्फ अस्थायी होगी, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था फिलहाल एक गहरी संरचनात्मक समस्या से जूझ रही है। इसमें पूंजी और नए आइडियाज की कमी शामिल है। भारत पूर्वी एशिया (जैसे चीन या दक्षिण कोरिया) की तरह मैन्युफैक्चरिंग एक्सपोर्ट में बड़ी सफलता हासिल नहीं कर पाया है। वहीं भारत लंबे समय से अपने व्यापार घाटे को विदेशी निवेश के जरिए संतुलित करता आया है। लेकिन अब यह मॉडल कमजोर पड़ता दिख रहा है। पिछले कुछ वर्षों में विदेशी वेंचर कैपिटल और प्राइवेट इक्विटी कंपनियां भारतीय स्टार्टअप्स और कंपनियों में अपनी हिस्सेदारी बेचकर पैसा निकाल रही हैं। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी भारतीय यूनिट्स में हिस्सेदारी बेचकर डॉलर बाहर निकाले हैं। हुंडई मोटर और एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारतीय शेयर बाजार के ऊंचे वैल्यूएशन का फायदा उठाकर अपनी स्थानीय इकाइयों के शेयर बेचे। पिछले साल आईपीओ के जरिए जुटाए गए फंड का 60% से अधिक हिस्सा मूल प्रमोटरों को सुरक्षित एग्जिट देने में चला गया। यानी भारतीय परिवारों और घरेलू संस्थानों ने भारतीय शेयर खरीदे, जबकि विदेशी निवेशक यहां से डॉलर निकालकर अपने देश ले गए। विश्लेषकों का कहना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में भारत अभी चीन, दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों से काफी पीछे है।

दक्षिण कोरिया और ताइवान AI हार्डवेयर और सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में वैश्विक बढ़त बनाए हुए हैं, वहीं भारत अभी भी डेटा सेंटर और आउटसोर्सिंग मॉडल पर ज्यादा निर्भर है। इसका असर रोजगार और विदेशी निवेश दोनों पर दिख रहा है। FY20 में जहां भारत में शुद्ध प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) 56 अरब डॉलर था, वहीं पिछले वित्त वर्ष के पहले 9 महीनों में यह घटकर सिर्फ 29 अरब डॉलर रह गया। भारतीय कंपनियां खुद विदेशों में ज्यादा निवेश कर रही हैं, जिससे देश में नए रोजगार पैदा करने की रफ्तार धीमी पड़ रही है। पूंजी की कमी का असर भारतीय रुपये पर भी साफ दिखाई दे रहा है। पिछले दो वर्षों में रुपया एशिया की सबसे कमजोर प्रदर्शन करने वाली मुद्राओं में शामिल रहा है। डॉलर के मुकाबले रुपया हाल के महीनों में 100 के स्तर के करीब पहुंच गया था। क्रिसिल (CRISIL) के अनुसार अगर सप्लाई चेन का यह व्यवधान 9 महीने तक खिंच जाता, तो 34 सेक्टरों में भारतीय कंपनियों का प्रॉफिट मार्जिन 200 बेसिस पॉइंट (2%) तक सिकुड़ जाता। इसी जोखिम को देखते हुए न केवल विदेशी निवेशक भारत से दूरी बना रहे हैं, बल्कि देश के फिनफ्लुएंसर्स भी भारतीय परिवारों को बेहतर रिटर्न के लिए अपना पैसा विदेशी शेयरों में लगाने की सलाह दे रहे हैं।

एमपीसी की बैठक से पहले पूर्व आरबीआई गवर्नर सुब्बाराव का बयान- रुपये को गिरने दे सरकार

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के पूर्व गवर्नर डी सुब्बाराव ने कहा है कि केंद्रीय बैंक को बाहरी झटकों से निपटने के लिए रुपये को और अधिक टूटने देना चाहिए। अगर महंगाई का दबाव बढ़ता है, तो तुरंत ब्याज दरों में बढ़ोतरी करने के बजाय तरलता प्रबंधन (Liquidity Management) के उपायों पर भरोसा करना चाहिए। सुब्बाराव का यह बयान आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति (MPC) की 3 जून से 5 जू के बीच होने वाली अहम बैठक से ठीक कुछ दिन पहले आया है। इस बैठक में पश्चिम एशिया संकट के कारण कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और महंगाई पर चर्चा की जानी है। सुब्बाराव ने कहा कि रुपये को मजबूती से बचाने के बजाय उसे बाजार के अनुसार खुद को ढालने की अनुमति दी जानी चाहिए, क्योंकि मौजूदा दबाव भारत के बाहरी संतुलन में आई गिरावट को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि एक कमजोर रुपया बाहरी झटकों को सोखने के लिए एक नेचुरल शॉक एब्जॉर्बर की तरह काम करता है। एक्सचेंज-रेट का संकट असल में भरोसे का संकट होता है। अगर निवेशक, आयातक और आम परिवार यह मानने लगें कि रुपया और कमजोर होगा, तो उनका व्यवहार ऐसा हो जाता है जो वास्तव में रुपये को और कमजोर कर देता है। डी सुब्बाराव, आरबीआई के पूर्व गवर्नर रुपया रिकॉर्ड निचले स्तर पर भू-राजनीतिक तनाव और कच्चे तेल की ऊंची कीमतों के कारण भारतीय रुपया लगातार दबाव में है। इसी महीने की शुरुआत में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 97.15 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंच गया था।पश्चिम एशिया संकट की शुरुआत से अब तक रुपये में करीब 5% की गिरावट आई है। साल 2026 की शुरुआत से अब तक रुपया 6% से अधिक गिर गया है। सुब्बाराव के अनुसार, आरबीआई वर्तमान में आर्थिक विकास, महंगाई और मुद्रा स्थिरता के बीच एक बेहद मुश्किल संतुलन का सामना कर रहा है। उन्होंने कहा कि ब्याज दरें और घटाने पर महंगाई और करेंसी पर दबाव और बढ़ सकता है। वहीं दरें बढ़ाने पर देश की आर्थिक गतिविधियों और जीडीपी ग्रोथ को नुकसान पहुंच सकता है।

ज़िंदगी की हर मुश्किल का दिव्य समाधान है विष्णु सहस्त्रनाम, पाठ से मिलेंगे चमत्कारी लाभ

महाभारत के 'अनुशासन पर्व' में सबसे पहले विष्णु सहस्त्रनाम का जिक्र मिलता है। यह वह समय था जब कुरुक्षेत्र में पांडवों और कौरवों का युद्ध समाप्त हो चुका था और भीष्म पितामह बाणों की शैय्या पर लेटे हुए अपने आखिरी समय का इंतजार कर रहे थे। तब धर्मराज युधिष्ठिर ने पूछा था कि इस दुनिया में सबसे बड़ा धर्म क्या है। वहीं किसके जब से व्यक्ति को हर दुख से मुक्ति मिल सकती है। तब भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को जगत के पालनहार भगवान श्रीहरि विष्णु के 1000 नामों के महत्व के बारे में बताया था। बता दें कि महाभारत, अनुशासन पर्व अध्याय 149 में विष्णु सहस्त्रनाम का उल्लेख मिलता है। विष्णु सहस्त्रनाम का मतलब भगवान विष्णु के 1000 नामों से है। माना जाता है कि भगवान विष्णु के इन नामों में पूरी सृष्टि का सार छिपा है। ऐसे में जब कोई व्यक्ति इनका जप करता है, तो उसके आसपास एक ऐसी ऊर्जा बनती है, जोकि नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है।

जानिए कैसे करें विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ

विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने के लिए कोई कठिन नियम नहीं है। सुबह स्नान आदि के बाद साफ कपड़े पहनकर शांति से बैठ जाएं। अगर आप संस्कृत में इसको पढ़ नहीं सकते हैं, तो आप इसको सुन भी सकते हैं या फिर इसका हिंदी अनुवाद पढ़ सकते हैं। इसका एक सबसे जरूरी नियम 'भाव' और 'श्रद्धा' है।

विष्णु सहस्रनाम

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥
यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पारिषद्याः परः शतम् ।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये ॥२॥
व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥३॥
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥४॥
अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने ।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥५॥
यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥६॥
ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे।
श्रीवैशम्पायन उवाच-
श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥७॥
युधिष्ठिर उवाच-
किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥८॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥९॥
भीष्म उवाच-
जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥१०॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥११॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥१२॥
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥१३॥
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥१४॥
परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥१५॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१६॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥१७॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥१८॥
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१९॥
ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥२०॥
अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः ।
त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थे विनियोज्यते ॥२१॥
विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।
अनेकरूप दैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमं ॥२२॥
पूर्वन्यासः
श्रीवेदव्यास उवाच
ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य ॥
श्री वेदव्यासो भगवान ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता ।
अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम् ।
देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः ।
उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः ।
शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम् ।
शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति नेत्रम् ।
त्रिसामा सामगः सामेति कवचम् ।
आनन्दं परब्रह्मेति योनिः ।
ऋतुः सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः ॥
श्रीविश्वरूप इति ध्यानम् ।
श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं सहस्रनामजपे विनियोगः ॥
अथ न्यासः
ॐ शिरसि वेदव्यासऋषये नमः ।
मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः ।
हृदि श्रीकृष्णपरमात्मदेवतायै नमः ।
गुह्ये अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजाय नमः ।
पादयोर्देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तये नमः ।
सर्वाङ्गे शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकाय नमः ।
करसंपूटे मम श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः ॥
इति ऋषयादिन्यासः ॥
अथ करन्यासः
ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कार इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
अमृतांशूद्भवो भानुरिति तर्जनीभ्यां नमः ।
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति मध्यमाभ्यां नमः ।
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्य इत्यनामिकाभ्यां नमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
इति करन्यासः॥
अथ षडङ्गन्यासः
ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कार इति हृदयाय नमः ।
अमृतांशूद्भवो भानुरिति शिरसे स्वाहा ।
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शिखायै वषट् ।
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्य इति कवचाय हुम् ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वीति नेत्रत्रयाय वौषट् ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इत्यस्त्राय फट् ।
इति षडङ्गन्यासः ॥
श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे विष्णोर्दिव्यसहस्रनामजपमहं करिष्ये इति सङ्कल्पः ।
अथ ध्यानम्-
क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतेमौक्तिकानां मालाकॢप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूष वर्षैः
आनन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदा
शङ्खपाणिर्मुकुन्दः॥१॥
भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्र सूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य
वास्तेयमब्धिः।
अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यैः
चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवन वपुषं विष्णुमीशं नमामि॥२॥
ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥३॥
मेघश्यामं पीतकौशेयवासं
श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं
विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम्॥४॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥५॥
सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥६॥
छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि
आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलंकृतम् ।
चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कित वक्षसं
रुक्मिणी सत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये॥७॥

घर की छत पर इन पक्षियों का बोलना न करें इग्नोर, आने वाले संकट का देते हैं संकेत, वास्तु गुरु ने बताए सरल उपाय

वैसे तो घर की छत पर पक्षियों का आना और उन्हें दाना-पानी देना अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। लेकिन वास्तुशास्त्र के अनुसार, अगर कुछ पक्षी घर की छत पर लगातार कई दिनों तक आकर रोते या अजीब आवाजें करते हैं तो इसे अच्छा संकेत नहीं माना जाता है। ये पक्षी हमें आने वाले समय से जुड़े संकेत देते हैं। जिसे पहचानकर सजग हो जाना चाहिए और कुछ उपाय अवश्य करने चाहिए क्योंकि ये पक्षी हमें आने वाले आर्थिक संकट, गृह क्लेश आदि समस्याओं का संकेत दे सकते हैं। ऐसे में आइए वास्तु गुरु मान्या से विस्तार से जानें कि घर की छत पर किन-किन पक्षियों का आकर बोलना या रोना शुभ नहीं माना जाता है। ये हमें किस प्रकार के संकेत देते हैं और इनके इसके लिए क्या उपाय करना चाहिए। घर की छत पर किन पक्षियों का दिखना होता है अशुभ? वास्तु गुरु मान्या के अनुसार, घर की छत या बालकनी पर लगातार कुछ पक्षियों का आकर बैठना और अजीब तरीके की आवाज करना वास्तुशास्त्र में शुभ नहीं माना जाता है। गिद्ध या चील का बोलना : अगर आपके घर की छत पर बार-बार गिद्ध या चील आकर बैठती है तो इसे अच्छा संकेत नहीं माना जाता है। यह वास्तु दोष का कारण हो सकता है। चमगादड़ : मान्यता है कि अगर घर के किसी भी हिस्से या छत पर लगातार चमगादड़ आते हैं तो इसे बेहद अशुभ माना जाता है। उल्लू का रोना : अगर आपके घर की छत पर लगातार कई दिनों तक रात के समय उल्लू आकर रोए या अजीब आवाज करे, तो इसे भी अशुभ संकेत माना जाता है। दक्षिण दिशा में कौआ : आमतौर पर घर की छत पर कौए का आना मेहमान के आने का संकेत होता है। लेकिन अगर कौआ आपके घर के दक्षिण दिशा की ओर मुख करके आवाज निकाले तो इसे अच्छा नहीं मानते हैं। टिटहरी : वास्तु और ज्योतिषशास्त्र में टिटहरी का घर की छत पर बैठना या रोना बिल्कुल अच्छा नहीं मानते हैं। वहीं, इसे लेकर ऐसा भी कहा जाता है कि टिटहरी का आना मौसम में बदलाव के संकेत भी देता है। ये पक्षी असल जीवन से जुड़े देते हैं संकेत वास्तु गुरु मान्या बताती हैं कि कुछ पक्षियों का घर पर आकर बोलना या रोना बेवजह नहीं होता है। बल्कि ये हमें जीवन में होने वाली कुछ घटनाओं के संकेत देते हैं। आर्थिक समस्या का संकेत : अगर घर की छत पर बार-बार चमगादड़ या गिद्ध आए तो यह दरिद्रता आने का संकेत हो सकता है। साथ ही, इसे आर्थिक समस्याएं आने का संकेत भी माना जाता है। ऐसे में व्यक्ति को अधिक सजग रहना चाहिए। गृह क्लेश : वास्तु अनुसार अगर कौआ घर की दक्षिण दिशा की ओर मुख करके आवाज करे, तो यह घर-परिवार में किसी मनमुटाव या झगड़े का संकेत हो सकता है। साथ ही, इसे सम्मान में कमी आने का संकेत भी माना जाता है। स्वास्थ्य से जुड़ा संकेत : इन पक्षियों का घर की छत पर आकर बोलना या रोना स्वास्थ्य को लेकर भी संकेत देता है। मान्यता है कि ये परिवार में किसी सेहत में उतार-चढ़ाव की ओर भी इशारा करते हैं। नकारात्मक ऊर्जा : अगर घर की छत पर लगातार ये पक्षी बोलते हैं, तो इसका प्रभाव घर के वास्तु पर भी पड़ता है और वहां के वातावरण से सकारात्मक ऊर्जा कम होने लगती है। इन पक्षियों के दिखने पर करें ये सरल उपाय छत की सफाई : अगर आपके घर की छत पर इनमें से कोई भी पक्षी आकर बार-बार बोलती या रोती है, तो ऐसे में सबसे पहले अपने घर की छत की अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए। वहां किसी भी प्रकार का कबाड़ या सूखी लकड़ियों को इकट्ठा करके न रखें।

पिंजरे में न रखें पक्षी : वास्तुशास्त्र के अनुसार, किसी भी पक्षी को पिंजरे में कैद करके नहीं रखना चाहिए। ऐसा करने से घर में कर्ज और बीमारी बढ़ सकती है।

पक्षियों के लिए दाना-पानी रखें : अपने घर की छत को हमेशा साथ रखें और वहां चिड़िया, कबूतर आदि के लिए हमेशा दाना और पानी की व्यवस्था जरूर करके रखें। ऐसा करने से घर-परिवार पर इसका शुभ प्रभाव पड़ता है।

सेंधा नमक का पोछा : घर में सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए हफ्ते में कम से कम एक या दो बार सेंधा नमक का पोछा जरूर लगाना चाहिए। ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है।

कपूर या लोबान का धुआं : शाम के समय कूपर या लोबान जलाकर उसका धुआं अपने पूरे घर में दिखाना चाहिए। साथ ही, घर की छत पर भी धुआं दिखाएं। इससे बाधाएं टल सकती हैं।

दीपक जलाएं : अपने घर के मुख्य द्वार और छत पर शाम के समय रोजाना एक दीपक जलाकर जरूर रखें। साथ ही, श्रद्धा पूर्वक गायत्री मंत्र का जप करें। ऐसा करने से सभी दोष दूर होते हैं।

आज का राशिफलः मिथुन और कन्या राशि को धन लाभ के मिलेंगे शानदार अवसर

मेष राशि सूर्यदेव आज आपके दूसरे भाव (धन और वाणी का क्षेत्र) में विराजमान हैं। यह स्थिति आपके फाइनेंशियल प्लानिंग और बचत के प्रयासों को पूरा सपोर्ट कर रही है। आज आपको कम्युनिकेशन, बिजनेस मार्केटिंग या नेटवर्किंग से जुड़े कामों में अच्छा मुनाफा हो सकता है। राहु आपके ग्यारहवें घर में बैठे हैं, जो अचानक धन लाभ के शानदार अवसर ला सकते हैं। ध्यान रहे, आज बिना सोचे-समझे किसी को भी पैसा उधार देने से आपको बचना चाहिए।

वृषभ राशि दूसरे भाव में बैठे बुधदेव, शुक्रदेव और बृहस्पतिदेव आपकी आर्थिक योजनाओं को बेहतरीन मजबूती दे रहे हैं। बिजनेस, नेटवर्किंग या बातचीत के माध्यम से आज आपकी इनकम के सोर्स बेहतर हो सकते हैं। हालांकि, मंगलदेव आपके बारहवें भाव में गोचर कर रहे हैं, जो अचानक होने वाले खर्चों के प्रति सचेत करते हैं। जल्दबाजी में आकर पैसे खर्च करने से बचें। आज जरूरत से ज्यादा लग्जरी की चीजों पर धन बर्बाद न करें।

मिथुन राशि आर्थिक दृष्टिकोण से आज का दिन सामान्य लेकिन स्थिर बना रहने वाला है। बुधदेव और बृहस्पतिदेव आपकी ही राशि यानी पहले भाव में मौजूद हैं। यह स्थिति आपको धन के मामलों में बहुत ही व्यावहारिक और सटीक फैसले लेने में मदद करेगी। बिजनेस, राइटिंग या नेटवर्किंग से जुड़े कामों में लाभ के योग हैं। वृषभ राशि में बैठे सूर्यदेव आपके बारहवें भाव में हैं, इसलिए आज फिजूलखर्ची और ऑनलाइन शॉपिंग से दूरी बनाकर रखें।

कर्क राशि आर्थिक मामलों में आज का दिन आपके लिए औसत रहने के संकेत दे रहा है। सूर्यदेव आपके ग्यारहवें भाव में गोचर कर रहे हैं, जिससे आपको सोशल कॉन्टैक्ट्स और प्रोफेशनल सर्कल के जरिए धन लाभ हो सकता है। राहु आपके आठवें भाव में बैठे हैं, जो सलाह देते हैं कि किसी भी जोखिम भरे निवेश या गुप्त पैसों के लेन-देन से पूरी तरह दूर रहें। आज घर या परिवार की जरूरतों पर अचानक कुछ अनपेक्षित खर्चे सामने आ सकते हैं।

सिंह राशि आज आपको ग्रुप एक्टिविटीज, नेटवर्किंग या सही बातचीत के माध्यम से आर्थिक लाभ मिल सकता है। मिथुन राशि में बैठे बुधदेव और बृहस्पतिदेव धन के मामलों में आपकी व्यावहारिक सोच को मजबूत कर रहे हैं। सूर्यदेव आपके दसवें भाव में गोचर कर रहे हैं, जो करियर में स्टेबिलिटी के साथ-साथ अच्छे फाइनेंशियल इनफ्लो का संकेत देते हैं। किसी भी तरह का आर्थिक रिस्क लेने या किसी के अस्पष्ट वादों पर भरोसा करने से आज आपको बचना चाहिए।

कन्या राशि आर्थिक मामलों को लेकर आज का दिन काफी महत्वपूर्ण रहने वाला है। चंद्रदेव का दूसरे भाव में होना आपको एक सटीक बजट बनाने और लॉन्ग टर्म प्लानिंग करने के लिए प्रेरित करेगा। दसवें भाव में बुधदेव और बृहस्पतिदेव की युति करियर के माध्यम से धन लाभ के बेहतरीन अवसर ला सकती है। हालांकि, आठवें भाव के मंगलदेव आपको चेतावनी देते हैं कि किसी भी तरह के सट्टेबाजी, जोखिम भरे निवेश या बेवजह का कर्ज लेने से बिल्कुल दूर रहें।

तुला राशि आज आपके आर्थिक मामलों में बहुत ही सोच-समझकर कदम उठाने की जरूरत है। सूर्यदेव आपके आठवें भाव में गोचर कर रहे हैं, जो सलाह देते हैं कि किसी भी तरह के रिस्की इन्वेस्टमेंट या भावुक होकर धन का कोई फैसला न लें। हालांकि, नौवें भाव में बैठे बुधदेव और बृहस्पतिदेव आपकी नॉलेज-बेस्ड इनकम और यात्रा से जुड़े लाभ के योग बना रहे हैं। अचानक कुछ खर्चे आ सकते हैं, इसलिए पैसों का मैनेजमेंट बहुत ही व्यावहारिक तरीके से करें।

वृश्चिक राशि आज के दिन आपको अपने आर्थिक मामलों पर बहुत बारीकी से नजर रखने की जरूरत होगी। आठवें भाव में बुधदेव और बृहस्पतिदेव की उपस्थिति ज्वाइंट फाइनेंस, टैक्स, लोन या पुराने निवेश से जुड़ी बातचीत को बढ़ा सकती है। भावनाओं में बहकर पैसों से जुड़ा कोई भी बड़ा निर्णय न लें। आज कुछ छिपे हुए खर्चे अचानक सामने आ सकते हैं। एक ठोस और व्यावहारिक बजट बनाकर चलना ही आज आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत रखेगा।

धनु राशि चंद्रदेव आज आपके ग्यारहवें भाव (लाभ के क्षेत्र) में गोचर कर रहे हैं। यह स्थिति सोशल कॉन्टैक्ट्स और टीमवर्क के जरिए अच्छे आर्थिक लाभ की ओर इशारा कर रही है। बातचीत और मीडिया से जुड़े कामों से जुड़े लोगों को आज बेहतरीन अवसर मिल सकते हैं। छठे भाव में सूर्यदेव का होना आपके धन प्रबंधन को व्यावहारिक बनाएगा। ध्यान रहे, आज किसी भी तरह के सट्टेबाज़ी या भावनाओं में आकर किए गए निवेश से पूरी तरह दूरी बनाकर रखें।

मकर राशि आर्थिक तौर पर आज का दिन स्थिर रहेगा, लेकिन आपको पैसों के मैनेजमेंट में थोड़ी सावधानी रखनी होगी। राहु आपके दूसरे भाव में बैठे हैं, जो अचानक कुछ बड़े और अनचाहे खर्चे सामने ला सकते हैं। छठे भाव में बुधदेव और बृहस्पतिदेव की उपस्थिति काम से जुड़े आर्थिक फैसलों में आपकी मदद करेगी। आज किसी भी तरह की जल्दबाजी में आकर की जाने वाली शॉपिंग या जोखिम भरे वादों से खुद को दूर रखना ही आपके लिए बेहतर होगा।

कुंभ राशि अगर आप आज व्यावहारिक तरीके से चलेंगे, तो आपकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत और स्थिर बनी रहेगी। दूसरे भाव में विराजमान शनिदेव आपको लगातार बचत करने और लॉन्ग टर्म फाइनेंशियल प्लानिंग की प्रेरणा दे रहे हैं। नौवें भाव के चंद्रदेव शिक्षा, यात्रा या कंसल्टेंसी के काम से जुड़े जातकों को अच्छा धन लाभ करा सकते हैं। आज के दिन फिजूल की विलासिता और दिखावे की चीजों पर पैसा खर्च करने से बचें।

मीन राशि आज आपको धन से जुड़े मामलों में थोड़ी ज्यादा सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। चंद्रदेव आपके आठवें भाव में गोचर कर रहे हैं, जिससे ज्वाइंट प्रॉपर्टी, लोन, टैक्स या अचानक आने वाले गुप्त खर्चों पर आपका ध्यान बढ़ेगा। दूसरे घर में बैठे मंगलदेव इशारा करते हैं कि आज पैसों को लेकर किसी से भी तीखी बहस न करें। बिना सोचे-समझे किए गए खर्चे आपको परेशानी में डाल सकते हैं, इसलिए आज पैसों का लेन-देन बहुत ही समझदारी से करें।

हथेली पर मौजूद ये तीन निशान दिलाते हैं राजयोग, राजनीति में बुलंद होता है सितारा

हस्त रेखा शास्त्र में हाथ की रेखाओं और उभारों का विशेष महत्व बताया गया है। व्यक्ति के हाथ पर मौजूद कुछ खास चिन्हों के जरिए उसके स्वास्थ्य, भाग्य और जीवन में आने वाले बदलावों का आकलन किया जाता है। इनमें से कुछ निशान बेहद ही खास माने जाते हैं। हथेली पर इनका होना अत्यंत शुभ और राजयोग देने वाला माना जाता है। आइए जानते हैं ऐसे कौन से निशान हैं जो व्यक्ति को जीवन में सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाते हैं।हथेली पर भाला, धनुष या बाण का निशान हस्त रेखा शास्त्र के अनुसार, अगर किसी पुरुष या महिला के हाथ पर भाला, धनुष या बाण का निशान दिखाई दे रहा है, तो ऐसे लोग जीवन में उच्च पद और मान-सम्मान प्राप्त करते हैं। यही लोग आगे चलकर राजनीति में बड़ा मुकाम हासिल करते हैं और सत्ता पर विराजमान होते हैं। इन लोगों में नेतृत्व क्षमता कूट-कूट कर भरी होती है और ये निर्णय लेने में भी माहिर होते है।

वहीं, किसी व्यक्ति के हाथ पर ये तीनों निशान एक साथ हो तो इसे अत्यंत दुर्लभ राजयोग माना जाता है। हस्त रेखा शास्त्र के अनुसार, ऐसे लोग राजा या रानी के समान सुख-सुविधाएं प्राप्त करते हैं। वर्तमान समय के अनुसार, ये लोग राजनीति में बड़ी सफलता हासिल करते हैं और समाज में प्रभावशाली बनते हैं। इनको जीवन में किसी भी चीज की कभी कमी नहीं होती है।

हथेली पर राजयोग देने वाले निशान

इसके अलावा हाथ पर चक्र और ध्वज के निशान को भी बेहद शुभ माना गया है। हस्त रेखा शास्त्र के अनुसार, इन दोनों निशानों का एक साथ होना व्यक्ति को अपार धन, प्रतिष्ठा और मान-सम्मान दिलाता है। ऐसे लोगों को देशवासियों का सम्मान प्राप्त होता है और आगे चलकर यही लोग महान शासक या प्रधानमंत्री बनते हैं। ये लोग अपनी बुद्धिमानी और अच्छे व्यवहार के कारण प्रसिद्धि पाते हैं।

माहवारी शर्म नहीं, स्वास्थ्य और स्वाभिमान का विषय

ग्रामीण अंचलों में जागरूकता की अलख विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस पर महिलाओं और किशोरियों को स्वच्छता,सुरक्षा और सम्मान का संदेश

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस के अवसर पर विकासखंड घोड़ाडोंगरी के ग्राम पंचायत विक्रमपुर एवं ग्राम पंचायत सुखाढाना में ग्राम भारती महिला मंडल द्वारा जागरूकता एवं सैनिटरी पैड वितरण कार्यक्रम का आयोजित किया गया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NRHM) भोपाल के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं एवं किशोरियों को माहवारी स्वच्छता,स्वास्थ्य सुरक्षा और आत्मसम्मान के प्रति जागरूक किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ग्राम भारती महिला मंडल की अध्यक्ष भारती अग्रवाल ने कहा कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक महिलाएं और किशोरियां माहवारी के दौरान पुराने कपड़ों का उपयोग करती हैं।कई बार इन कपड़ों को सही तरीके से साफ और धूप में सुखाया नहीं जाता, जिससे संक्रमण और गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्रों में जागरूकता तेजी से बढ़ी है,लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी माहवारी को लेकर संकोच और जानकारी का अभाव देखने को मिलता है।उन्होंने महिलाओं से अपील करते हुए कहा कि माहवारी के समय स्वच्छ सैनिटरी पैड का उपयोग करें और हर 4 से 6 घंटे में पैड बदलना जरूरी है। यदि कपड़े का उपयोग करना मजबूरी हो तो उसे साफ पानी से धोकर तेज धूप में सुखाना चाहिए।साथ ही हाथों की स्वच्छता,शरीर की साफ-सफाई और पौष्टिक आहार का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।कार्यक्रम में महिलाओं एवं किशोरियों को यह भी बताया गया कि माहवारी के दौरान अत्यधिक दर्द,बदबू,खुजली,अत्यधिक रक्तस्राव या अनियमितता जैसी समस्याएं होने पर तत्काल प्रभाव के साथ स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सकीय सलाह लेना चाहिए।विशेषज्ञों के अनुसार माहवारी के दौरान स्वच्छता की अनदेखी से संक्रमण,एनीमिया और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।संस्था द्वारा उपस्थित महिलाओं एवं बालिकाओं को सैनिटरी पैड वितरित किए गए तथा उन्हें सुरक्षित और नियमित उपयोग की विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष भारती अग्रवाल एवं संस्था कोषाध्यक्ष नंदा सोनी की विशेष उपस्थिति रही। इस दौरान महिलाओं एवं किशोरियों को गुड टच एवं बैड टच की जानकारी देकर आत्म-सुरक्षा और अधिकारों के प्रति भी जागरूक किया गया।कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं एवं बालिकाओं को माहवारी स्वच्छता अपनाने तथा स्वच्छ और सुरक्षित जीवनशैली बनाए रखने की शपथ भी दिलाई गई। ग्राम पंचायत विक्रमपुर की सरपंच यशोदा मर्सकोले एवं ग्राम पंचायत सुखाढाना की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अनिता हनोते की विशेष उपस्थिति कार्यक्रम में रही।कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं एवं किशोरियों को यह संदेश देना था कि माहवारी कोई शर्म या छुपाने का विषय नहीं,बल्कि महिलाओं के स्वास्थ्य और सम्मान से जुड़ा एक प्राकृतिक पहलू है,जिस पर खुलकर चर्चा और जागरूकता बेहद जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस तरह के जागरूकता अभियान महिलाओं के स्वास्थ्य और आत्मविश्वास को नई दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

हेलमेट कम,दलाली का प्रेस कार्ड ज़्यादा चमक रहा है सुपर क्रिटिकल परियोजना में..!

11हजार 678 करोड़ की 660 मेगावाट इकाई में स्थानीय युवाओं के सपनों पर बिचौलिया ब्रिगेड भारी डिग्रीधारी लाइन में,चापलूस फाइल में

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

कभी प्रदेश की ऊर्जा राजधानी कहलाने वाली विद्युत नगरी सारनी इन दिनों 660 मेगावाट की सुपर क्रिटिकल इकाई से कम और संपर्क क्रिटिकल व्यवस्था से ज्यादा चर्चा में है। 11 हजार 678 करोड़ रुपए की इस विशाल परियोजना में मशीनों से ज्यादा यदि कुछ तेज़ी से दौड़ रहा है,तो वह है बिचौलियों का नेटवर्क। हालत यह है कि जिन युवाओं ने आईटीआई, डिप्लोमा और तकनीकी डिग्रियां हासिल कर रोजगार के सपने सजाए थे,वे आज ठेकेदारों के दफ्तरों के बाहर उम्मीदों की फाइल दबाए घूम रहे हैं,जबकि कुछ स्वयंभू सेटिंग विशेषज्ञ प्रेस कार्ड गले में डालकर अधिकारियों के इर्द-गिर्द ऐसे मंडरा रहे हैं मानो पूरी परियोजना का टेंडर इन्हीं के ड्राइंग रूम में पास होना हो। पेटी ठेकेदार के जरिए दो चार काम लेकर मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के सबसे बड़े विशेषज्ञ भी कई कार्ड धारक हो गए है।ऐसे मे स्थानीय युवाओं का आरोप है कि संबंधित ठेकेदारों द्वारा बाहरी मजदूरों को प्राथमिकता दी जा रही है।यदि किसी स्थानीय मजदूर को काम दिया भी जा रहा है,तो उसे कलेक्टर दर के अनुरूप वेतन तक नहीं मिल रहा। इससे युवाओं और मजदूरों में नाराज़गी लगातार बढ़ती जा रही है।बुधवार को युवाओं ने मुख्य अभियंता और थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपकर मांग की कि बिना किसी दलाल या बिचौलिये के सीधे स्थानीय आईटीआई, डिप्लोमा धारकों और मेहनतकश मजदूरों को रोजगार दिया जाए।क्षेत्र में चर्चा इस बात की भी है कि परियोजना स्थल पर इन दिनों तकनीकी योग्यता से ज्यादा पहचान योग्यता का महत्व बढ़ गया है। कई अधिकारी के छोटे-बड़े काम में व्यस्त है,तो कोई ठेकेदारों की चौखट पर अपनी निष्ठा साबित करने में जुटा हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानो परियोजना में रोजगार पाने के लिए डिग्री से ज्यादा जरूरी जुगाड़ प्रबंधन हो गया हो।युवाओं ने साफ संकेत दिए हैं कि यदि इस बार भी स्थानीय प्रतिभाओं को नजरअंदाज किया गया,तो बाहरी ठेकेदारों के लिए यहां काम करना आसान नहीं होगा।बुधवार को जिस तरह युवाओं की एकजुटता देखने को मिली,उसने यह स्पष्ट कर दिया कि अब बेरोजगारी पर चुप्पी साधना आसान नहीं रहेगा।अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि 11हजार 678 करोड़ की इस परियोजना में स्थानीय युवाओं को उनका हक मिलेगा या फिर प्रेस कार्ड वाली परिक्रमा ही रोजगार का नया मानक बनेगी।सारनी की जनता भी यह देखने को उत्सुक है कि सुपर क्रिटिकल परियोजना में आखिर बिजली ज्यादा बनेगी या फिर बिचौलियों की चमक और तेज होगी। इसके अलावा भारत हेवी इलेक्ट्रॉनिक कंपनी के अधिकारी भी इसरो दर से कम दाम पर पेटी दर पेटी पर काम वितरण करने का कार्य कर रहे हैं जो ठेकेदारों को लाभ का समाधान नहीं हो पा रहा है यह भी बड़ी परेशानी का कारण बनने की संभावना से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता अब आखिर यह सवाल सबसे बड़ा मुंह बकर खड़ा है कि जब सारी कम ऑनलाइन है तो फिर इस ऑनलाइन की श्रेणी में पारदर्शिता का उपयोग क्यों नहीं किया जा रहा है..?

ईद-उल-अज़हा की रौनक में गूंजा अमन का पैगाम

सारनी,पाथाखेड़ा,शोभापुर और बगडोना में अकीदत के साथ अदा हुई नमाज़, मुल्क में भाईचारे और खुशहाली की मांगी गई दुआ

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी अंतर्गत आने वाले सारनी,पाथाखेड़ा,शोभापुर और बगडोना क्षेत्र में गुरुवार को ईद-उल-अज़हा (बकरीद) का मुकद्दस त्योहार पूरे अदब,अकीदत और भाईचारे के माहौल में मनाया गया।अलग-अलग ईदगाहों और मस्जिदों में मुस्लिम समाज के लोगों ने नमाज़ अदा कर मुल्क में अमन-चैन,तरक्की और इंसानियत की सलामती के लिए ख़ास दुआएं मांगीं। त्योहार के अवसर पर पूरे क्षेत्र में सौहार्द और मोहब्बत का खुशनुमा माहौल देखने को मिला।जामा मस्जिद में ईद-उल-अज़हा की नमाज़ इमाम निज़ाम अली साहब ने अदा कराई। नमाज़ के बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर ईद मुबारक कहा और भाईचारे की मिसाल पेश की।मुस्लिम समाज के बुजुर्गों ने बताया कि ईद-उल-अज़हा त्याग,इंसानियत और जरूरतमंदों की मदद का पैगाम देने वाला त्योहार है। कुर्बानी के बाद गोश्त का बड़ा हिस्सा गरीब और जरूरतमंद परिवारों में तकसीम किया जाता है ताकि हर घर में ईद की खुशियां पहुंच सकें।अंजुमन कमेटी जामा मस्जिद के अध्यक्ष रफी अहमद एवं सचिव अब्दुल रहमान खान ने जानकारी देते हुए बताया कि सुबह 7 बजे से 8:30 बजे तक नमाज़ का सिलसिला चला। नमाज़ अदा करने के बाद लोगों ने मरहूम परिजनों की मगफिरत के लिए कब्रिस्तान पहुंचकर फ़ातिहा पढ़ी और दुआएं कीं।त्योहार के मद्देनज़र सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस प्रशासन भी पूरी तरह मुस्तैद नजर आया।सारनी एसडीओपी प्रियंका करचाम, थाना प्रभारी जयपाल इवनाती एवं नायब तहसीलदार संतोष पथोंरिया ने विभिन्न ईदगाहों और मस्जिदों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। पुलिस बल द्वारा पूरे क्षेत्र में लगातार गश्त कर शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने का कार्य किया गया।ईद-उल-अज़हा के इस पाक मौके पर सारनी, पाथाखेड़ा,शोभा पुर के मुस्लिम समाज ने एक बार फिर मोहब्बत,इंसानियत और कौमी एकता का संदेश देकर गंगा-जमुनी तहज़ीब की खूबसूरत मिसाल पेश की।

सारनी,पाथाखेड़ा,शोभापुर और बगडोना में अकीदत के साथ अदा हुई नमाज़,मुल्क में भाईचारे और खुशहाली की मांगी गई दुआ

बैतूल में मंगलसूत्र चोरी केस में तीन गिरफ्तार

सोने के जेवर बेचकर खरीदा आई फोन, ज्वेलर्स तक पहुंची पुलिस, जेठ का बेटा निकला मुख्य आरोपी

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल शहर के आर्य वार्ड कंपनी गार्डन क्षेत्र में घर से सोने के मंगलसूत्र चोरी के मामले में गुरुवार को कोतवाली पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से दो सोने के मंगलसूत्र, एक एप्पल मोबाइल और नकद राशि जब्त की है। आर्य वार्ड टिकारी निवासी नीलम खान ने 26 मई को कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि 13 मई को अपने दो सोने के मंगलसूत्र और अन्य जेवर घर की अलमारी के लॉकर में रखे थे। 23 मई को शाम करीब 4:30 बजे लॉकर चेक करने पर दोनों मंगलसूत्र गायब मिले। फरियादिया ने अपने जेठ के बेटे शाकिब पठान पर संदेह व्यक्त किया था, क्योंकि उसका घर में अक्सर आना-जाना था।

मंगलसूत्र बेचकर आईफोन खरीद लिया था : पुलिस ने जांच शुरू की और पूछताछ में आरोपी शाकिब पठान ने चोरी करना स्वीकार कर लिया। उसने बताया कि उसने चोरी किए गए दोनों मंगलसूत्र मोहल्ले की अंजू उर्फ अजरा खान को बेचने के लिए दिए थे। अंजू ने ये मंगलसूत्र कोठी बाजार स्थित श्याम ज्वेलर्स के संचालक धनराज सोनी को बेच दिए। पुलिस जांच में सामने आया कि मंगलसूत्र बेचकर मिली राशि में से शाकिब ने लगभग 40 हजार रुपए का एक एप्पल मोबाइल खरीदा था। उसने 5 हजार रुपए नकद अपने पास रखे थे, जबकि शेष राशि दोस्तों के साथ खर्च कर दी थी। पुलिस ने आरोपी से मोबाइल और नकद राशि जब्त कर ली है। अंजू उर्फ अजरा खान से पूछताछ में उसने धनराज सोनी को मंगलसूत्र बेचने की बात स्वीकार की। पुलिस ने धनराज सोनी के पास से लगभग 9 ग्राम वजन के दो सोने के मंगलसूत्र बरामद किए, जिनकी अनुमानित कीमत करीब 1.30 लाख रुपए बताई गई है। गिरफ्तार आरोपियों में आर्य वार्ड कंपनी गार्डन निवासी शाकिब पठान, चंद्रशेखर वार्ड सदर निवासी धनराज सोनी और कंपनी गार्डन निवासी अंजू उर्फ अजरा खान शामिल हैं। तीनों आरोपियों को गुरुवार को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है। इस मामले के खुलासे में थाना प्रभारी निरीक्षक देवकरण डेहरिया, अरुण यादव, बिजेश रघुवंशी, दीपक कटियार सहित पुलिस टीम की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

एक अरब 8 करोड़ की योजना फिर भी प्यासे झुग्गी बस्ती के लोग

पांच दिन सूखे रहे नल, गरीब बस्तियों में बूंद-बूंद पानी को तरसे परिवार वैकल्पिक व्यवस्था पर उठे बड़े सवाल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी के जलावर्धन योजना एक बार फिर सवालों के घेरे में आ गई है।लगभग एक अरब 8 करोड़ रुपए की भारी-भरकम लागत से तैयार की गई पेयजल व्यवस्था के बाद नगर के कई वार्डों, खासकर झुग्गी बस्तियों में रहने वाले गरीब परिवारों को पिछले पांच दिनों तक पानी के लिए दर-दर भटकना पड़ा। गुरुवार को अलग- अलग समय पर पाथाखेड़ा, शोभापुर और सारनी के कुछ हिस्सों में पानी की आपूर्ति तो शुरू हुई,लेकिन कई वार्डों में लोगों को देर शाम तक इंतजार करना पड़ा।सबसे अधिक परेशानी उन परिवारों को हुई जो रोज कमाकर खाने वाले हैं और जिनके घरों में पानी संग्रहित करने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। झुग्गी बस्तियों में रहने वाली महिलाओं और बच्चों को कई किलोमीटर दूर से पानी भरकर लाना पड़ा।कई स्थानों पर लोग निजी साधनों से पानी खरीदने को मजबूर हुए,जबकि कुछ परिवारों ने हैंडपंप और सार्वजनिक नलों के सहारे किसी तरह अपनी जरूरतें पूरी कीं।स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि जलावर्धन योजना का संचालन लक्ष्मी इंजीनियरिंग कंपनी के माध्यम से किया जा रहा है,तो तकनीकी खराबी आने की स्थिति में वैकल्पिक जल आपूर्ति की व्यवस्था पहले से तैयार रहनी चाहिए थी।लेकिन पांच दिनों तक न तो पर्याप्त टैंकर पहुंचे और न ही बंद पड़े हैंडपंपों की मरम्मत कराई गई।इससे गरीब और मजदूर वर्ग के सामने पीने के पानी का गंभीर संकट खड़ा हो गया।

नगर पालिका परिषद सारनी में लगभग 13 हजार से अधिक नल कनेक्शन दिए जा चुके हैं,लेकिन जलापूर्ति ठप होने से पहले उपभोक्ताओं को किसी प्रकार की पूर्व सूचना तक नहीं दी गई।लोगों का आरोप है कि यदि समय रहते सूचना दी जाती तो परिवार पानी का संग्रह कर सकते थे।वहीं पानी की गुणवत्ता को लेकर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। नियमों के अनुसार प्रतिदिन विभिन्न वार्डों से पानी के सैंपल लिए जाने चाहिए, लेकिन आरोप है कि केवल चुनिंदा स्थानों से सैंपल लेकर औपचारिकता पूरी कर ली जाती है।अब नगरवासियों का सीधा सवाल है कि जब करोड़ों रुपए खर्च किए गए हैं तो फिर हर तकनीकी खराबी के साथ पूरे नगर की पेयजल व्यवस्था क्यों ठप हो जाती है।आखिर झुग्गी बस्तियों और गरीब वार्डों के लिए स्थायी वैकल्पिक व्यवस्था कब बनाई जाएगी। यदि समय रहते जिम्मेदार विभाग और कंपनी नहीं चेते, तो आने वाले गर्म दिनों में यह संकट और भयावह रूप ले सकता है। इससे भी हश्र की बात तो यह है कि समाचारों में जिन हितग्राहियों के नाम प्रकाशित किया जा रहे हैं उन हितग्राहियों को फोन करके जल आवर्धन योजना का काम देखने वाले इंजीनियरों के माध्यम से उन्हें धमकाने का भी कार्य किया जा रहा है जो घोर निंदा की श्रेणी में आता है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949